1904

Date	No.	Date	No.

Date	No.	Date	No.

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

विषय संख्या.............................आगत नं0 32,089

लेखक...

शीर्षक...

....

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

कवि श्रीधर कृत

जंगनामा ।

श्रीराधाकृष्णदास और
श्रीकिशोरीलाल गोस्वामी
सम्पादित

और
काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा प्रकाशित

1904
TARA PRINTING WORKS,–BENARES.

इतिहास ।

---:o:---

औरङ्गज़ेब के बेटे बहादुरशाह के २६ फ़रवरी सन् १७१२ ई० (हिज्री ११२४ मुहर्रम २०) को मरने पर उनके लड़कोँ में झगड़ा खड़ा हुआ, वरञ्च यह झगड़ा पहिले ही से आरम्भ होगया था. बहादुरशाह के चार बेटे थे. मुईज़ुद्दीन (जहाँदारशाह) अज़ीमुश्शान, रफ़ीउश्शान और जहाँशाह. जहाँदारशाह से उस के रहन सहन के ढंग और पिता से प्रायः दूर अपनी राजधानी मुलतान में, जहाँ का वह सूबेदार था रहने के कारण पिता का जी फिर गया था तथा प्रायः सब लोग उससे अप्रसन्न थे. पिता का पहिले स्नेह तीसरे बेटे रफ़ीउश्शान पर था पर थोड़े दिन पीछे उसका चित्त इनसे भी फिर गया और दूसरे बेटे अज़ीमुश्शान पर कृपा होगई चौथा बेटा जहाँशाह प्रायः बीमार रहता था. अज़ीमुश्शान बङ्गाल और बिहार की सूबेदारी पर औरङ्गज़ेब के समय से ही था. इसने बङ्गाल की सूबेदारी और पिता की कृपा से बहुत सा धन एकत्र कर लिया था इससे उसके सब भाई कुढ़ते थे ।

बहादुरशाह के मरते समय लाहौर में उनके पास अज़ीमुश्शान था. तीनोँ भाइयोँ ने मिलकर उसपर चढ़ाई कर दिया. चार दिन तक घोर युद्ध हुआ. अज़ीमुश्शान की सेना भागी. अन्तिम दिन एक गोला आकर अज़ीमुश्शान की हाथी पर गिरा जिससे हाथी घबड़ाकर भागा और रावी नदी में अज़ीमुश्शान को लिए हुए डूब गया ।

जुलफ़िक़ारखाँ, बहादुरशाह के वज़ीर ने रफ़ीउश्शान और जहाँशाह को बराबर राज्य बाँट देने की प्रतिज्ञा किया था परन्तु अज़ीमुश्शान के मरने पर उसने राज्य बाँटना और लूट का धन देना अस्वीकार किया. जहाँशाह और रफ़ीउ-श्शान ने सेना संग्रह करके युद्ध आरम्भ किया परन्तु पहिले युद्ध में जहाँशाह मारा गया दूसरे दिन की लड़ाई में रफ़ीउश्शान भी वीरता से लड़कर मारा गया. बहादुरशाह ने विजय प्राप्त किया और लाहौर में, उसी लड़ाई के मैदान में ता० २१ सफ़र सन् ११२४ हिज्री (२९ मार्च १७१२ ई०) को दरबार करके भारतवर्ष का साम्राज्य पद ग्रहण किया. उसका नाम हुआ अबुलफ़तह मुहम्मद मुईज़ुद्दीन जहाँदारशाह।

अज़ीमुश्शान का बड़ा बेटा मुहम्मदकरीम छिपा हुआ था वह पकड़ा गया और बड़ी निर्दयता के साथ मारा गया

ता० १ मे १७१२ ई० को जहाँदारशाह दिल्ली के लिये चला और ता० २२ जून १७१२ ई० को दिल्ली पहुँचा. यह सुनकर कि अज़ीमुश्शान का दूसरा लड़का फ़र्रुख़सियर बङ्गाल से पटना में आगया है और दिल्ली पर चढ़ाई करने वाला है जहाँदारशाह ने अपने बड़े बेटे ऐज़ुद्दीन को ५०००० सेना और ९ करोड़ रुपया के साथ आगरा में नियत किया जिसमें वह फ़र्रुख़सियर का रास्ता रोके.

जहाँदारशाह ने लालकुँअर नाम की वेश्या को महल में डाल लिया था उसका नाम इम्तियाज़महल रक्खा गया और उस के परामर्श पर वह सब काम करता था. नाच तमाशे रोशनी आदि में इतना अपव्यय होता था कि अन्न, घी, तेल आदि बहुतही महँगे होगए थे. उसकी निर्दयता इसी से समझ लेना

चाहिए कि एक दिन जहाँदारशाह लालकुँअर के साथ यमुना किनारे की छत पर टहल रहा था, इतने में उसने एक नाव पर बहुत से मनुष्यों को यमुना पार करते देखा, लालकुँअर ने कहा कि "मैं ने कभी मुसाफ़िरों से लदी नाव डूबते और उसके सवारों की दशा नहीं देखा है" तुरन्त बादशाह का इशारा हुआ और एक नाव डुबाई गई. निदान उसके नातेदारों के अन्याय आचरण से लोगों के नाकों में दम आगया. सरदारों में आपस में वैर भाव बढ़ने लगा. रंडी भडुओं के अधिकार से भले आदमियों का दरबार में निरादर होने लगा. जहाँदारशाह दिन रात नाच रङ्ग में मस्त रहता था.

बहादुरशाह के मरने और पिता अज़ीमुश्शान के मारे जाने का समाचार पटना में फ़र्रुख़सियर के पास पहुँचा पहिले तो वह बड़ा दुखी हुआ और आत्मघात का विचार किया परन्तु माता की दृढ़ता और उत्तेजना से उसको साहस हुआ. उसने वहीं साम्राज्य पद ग्रहण किया और अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और सेना संग्रह करके दिल्ली की ओर कूच किया. बारहा के सैयद हसनअलीख़ाँ प्रसिद्ध नाम अब्दुल्लाहख़ाँ और उनके भाई सैयद हुसेनअलीख़ाँ इसके पक्ष पर हुए. इन में से पहिले को इलाहाबाद और दूसरे को बिहार की सूबेदारी केवल अज़ीमुश्शान की कृपा से मिली थी. इस ग्रंथ में इसी लड़ाई का सविस्तर वर्णन है, जिस का सारांश आगे दिया जायगा ।

फ़र्रुख़सियर का जन्म दक्षिण में, औरङ्गाबाद में हुआ था मिस्टर इर्विन साहब ने जर्नल एशियाटिक सोसाइटी नं० २ सन् १८९६ में इसके जन्म की तारीख १९ रमज़ान सन् १०९४

हिज्री (११ सितम्बर १६८३ ई०) वहुत ढूंढ के साथ निश्चय किया है, परन्तु पूज्य भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने "बादशाह दर्पण" में वृहस्पतिवार १३ रज्जब सन् १०९५ हिजरी लिखा है, यह ग्रंथ वहुत ही प्रामाणिक है क्योंकि यह दिल्ली शाही घराने के दफ्तर के आधार पर बना है. भारतेन्दु जी के मातामह शाही घराने के काशी में आने पर दीवान थे. फ़र्रुख़सियर बचपन ही में दिल्ली भेज दिया गया था परन्तु फिर सन् ११०५ हिजरी (सन् १६९३-१६९४ ई०) में प्रपितामह औरङ्गज़ेब ने दक्षिण में बुलाकर अपने पास तीन वर्ष तक रक्खा था. वहाँ से अपने पिता अज़ीमुश्शान के साथ आगरा और वहाँ से बङ्गाल आया. पिता वहादुरशाह की कृपा होने से अज़ीमुश्शान, फ़र्रुख़सियर को बङ्गाल में छोड़ कर लाहौर चला आया था, कुछ दिन पीछे फ़र्रुख़सियर को भी लाहौर में बुलाया था, वह पटना तक भी नहीं पहुँचा था कि लाहौर की ख़बर उसे लगी इस समय फ़र्रुख़सियर के पास न तो धन ही था न बल, केवल ४०० सेना साथ थी बड़े बड़े सब सरदारों ने जिनपर उसके पिता के बड़े बड़े उपकार थे मुँह मोड़ लिया था. केवल माता के साहस दिलाने पर आगे बढ़ने का विचार किया था ।

सैयद अब्दुल्लाह और हुसैनअली के मिलजाने पर और भी सरदार तथा ज़मींदार मिले. रुपया भी इकट्ठा हुआ और फ़र्रुख़सियर इलाहाबाद आया जो सैयद अब्दुल्लाह के अधिकार में था. वहाँ उसे राजा छबीलेराम भी मिले जिनके पास बहुत सा मालगुज़ारी का रुपया इकट्ठा था ।

जहाँदारशाह ने अपने बड़े बेटे ऐज़ुद्दीन को आगरा से

फ़र्रुख़सियर को रोकने के लिये इलाहाबाद भेजा पर वह हार कर आगरा भाग आया जिसका वर्णन इस ग्रंथ में है.

आगरा में घोर युद्ध हुआ, उसमें हारकर जहाँदारशाह लालकुँअर के साथ दिल्ली भाग आया. उसने भेष बदलने के लिये दाढ़ी मुड़वा डाली थी. यह लोग एक बैलगाड़ी पर दिल्ली आए. लालकुँअर अपने घर चलदी, जहाँदारशाह अकेला असदख़ाँ (ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ के पिता) के यहाँ गया, ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ एक दिन पहिले दिल्ली पहुँच गया था, पिता पुत्र ने निश्चय किया कि अब फ़र्रुख़सियर से लड़ना व्यर्थ है, उस से मिल जाना ही अच्छा होगा. उसने अभागे जहाँदारशाह को क़ैद कर लिया और फ़र्रुख़सियर के दिल्ली पहुँचने पर उसे पेश कर बहुत कुछ उन्नति की आशा की. फ़र्रुख़सियर ने दिल्ली पहुँचकर जहाँदारशाह को मरवा डाला. ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ के पिता और ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ को उनके निमकहरामी पर दंडित किया और निष्कंटक दिल्ली के राज्य सिंहासन पर विराजा।

———:o:———

ग्रन्थ का सारांश ।

जहाँदारशाह और फ़र्रुख़सियर का युद्ध ।

(जिस समय वहादुरशाह का परलोक हुआ, फ़र्रुख़सियर उस समय बङ्गाल में था) महाजनों की आपस की चिट्ठी से यह समाचार विदित हुआ । फ़र्रुख़सियर ने आज़मख़ाँ बख़शी को आज्ञा दिया कि जितनी फ़ौज मिलै उसे भरती करके दिल्ली की ओर चलना चाहिए । इसके पीछे कुछ दिन पर पक्का समाचार आया कि ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ और सब अमीर लोग मुईज़ुद्दीन से मिल गए उसने सब फ़ौज को भी फोड़ कर मिला लिया और मुईज़ुद्दीन को राज्य पर बैठा कर उसके नाम का ख़ुतबा पढ़ा गया तथा सारे राज्य में उसके नाम से फ़र्मान जारी किया गया है । यह सुनकर फ़र्रुख़सियर ने अपने सब सर्दारों को एक एक करके आज्ञा दी कि जिसे जितनी फ़ौज मिलै रखते जाओ । वह वहीं तख़्त पर बैठा। उसके अमीर लोग फ़ौज रखने लगे । सब से पहिले अब्दुल्लाहख़ाँ ने कूच किया । वह इलाहाबाद का सूबेदार नियत हुआ और उसने वहाँ अपना अधिकार जमाकर वहाँ मोर्चा दृढ़ किया ।

मीरजुमला दिल्ली में बैठा, फ़र्रुख़सियर को सब समाचार लिखता रहा । उसने लिखा कि सैयद राज़ख़ाँ इलाहाबाद के सूबेदार नियत हुए हैं । उसने हिरौल में सैयद अब्दुल ग़फ़ा-

र को आगे से भेजकर पीछे से धूमधाम के साथ ऐज़ुद्दीन के साथ भारी सेना लेकर कूच किया है । यह पत्र पढ़कर फ़र्रुख़सियर ने क्रोध के साथ सब अमीरों की ओर देखा। हुसैनअलीख़ां ने कहा कि उसके लिये अकेले अब्दुल्लाहख़ां बहुत हैं, कुछ चिन्ता न कीजिए उन्हें तुरंत समाचार दे देना चाहिए, वह उसके दल को मार भगावेंगे । फ़र्रुख़सियर ने सैयद अब्दुल्लाहख़ाँ के पास फ़र्मान भेजा. सैयद अब्दुल्लाहख़ाँ ने आज्ञानुसार सराय आलमचंद में डेरा डाल कर शत्रु का रास्ता रोका । अपने भाई के साथ सब सरदारों को देकर लड़ाई के लिये भेजा । ये सब अमीर दलबल सहित लड़ने के लिये प्रस्तुत हुए, सैफ़ुद्दीँअलीख़ाँ, निज़ामुद्दीँअलीख़ाँ, सिराजुद्दीँअलीख़ाँ, राजा रतनचन्द, मीरमुहम्मदख़ाँ, अनवरख़ाँ, समुन्दरख़ाँ, इदगारबेग, बर्क़न्दाज़ख़ाँ के बेटे मिर्ज़ा बहरामबेग, और सैयद दरवेशअलीख़ाँ, आदि कितनेही सरदार प्रस्तुत हुए ।

इधर ये लोग और उधर वे लोग आकर ठहरे । सवेरा होने पर दोनों दल का सामना हुआ और घोर लड़ाई आरम्भ हुई। सैयद सिराजुद्दीँअलीख़ाँ इस लड़ाई में मारे गए इस पर क्रोध के साथ महाघोर युद्ध मचा और अन्त में मीर सैफ़ुद्दीँ-अलीख़ाँ, निज़ामुद्दीँअलीख़ाँ आदि विजय प्राप्त करके कुतबुलमुल्क सैयद अब्दुल्लाहख़ाँ के पास आए । सैयद सब से गले मिले, बहुत कुछ पारितोषिक बाँटा । कुतबुलमुल्क ने साहबराय माथुर को आज्ञा दी कि सब समाचार यहाँ का बादशाह को लिख दें । और भाई हुसैनअलीख़ाँ को समझा करके लिखो कि अब आप लोग विलम्ब न कीजिए सेना

सहित शीघ्र आइए । यह भी लिखा कि ऐज़ुद्दीन ने कोइड़ा में डेरा किया है राजा छबीलेराम छल करके उनसे जाकर मिल गए हैं और असग़रअलीख़ाँ भी योंही इटावे में आगे से बढ़ कर मिल गए हैं पर दोनों का मन अपनी ओर है। इधर ज़ैनुद्दीख़ाँ, जीवाज़ख़ाँ, मुज़फ्फ़रअलीख़ाँ फ़कीरूल्लाहख़ाँ और महियारख़ाँ, आकर मिल गए हैं और ये सब सरदार हुज़ूर से मिलने पटने गए हैं । और समाचार पत्र वाहक इब्राहीमहुसैनख़ाँ के ज़ुबानी कहलाया। अमीरूलउमरा सैयद हुसैनअलीख़ाँ ने पत्र पढ़ा और सब समाचार बादशाह से निवेदन करके आगे बढ़ने की आज्ञा चाही । फ़र्रुख़सियर ने कहा कि दो दिन और ठहर जाइए पहिले सब वीर अमीरों को विदा कीजिए । ऐज़ुद्दीन की चिन्ता न करनी चाहिए, अब तो मुईज़ुद्दीन पर चढ़ाई करनी है।

दूसरे दिन बादशाह ने दर्बार, दीवान ख़ास में, किया और सैयद मुर्तज़ाख़ाँ को आगे से पछाँह की ओर बढ़ने की आज्ञा दी। मुर्तज़ाख़ाँ ने तुरन्त सेना सहित कूच किया और बहादुरपुर में डेरा डाला, फिर आज़मख़ाँबख़्शी को सेना सहित बढ़ने की आज्ञा दी. आज़मख़ाँ के चारो भाई महम्मद सालेहख़ाँ, महम्मद शुजा, महम्मद हुसैन, और ग़ुलामुहायुद्दी सजकर साथ हुए। और भी ये सब सरदार आज़मख़ाँ के साथ हुए, मीर अज़ीज़ख़ाँ, हेमख़ाँ (?), सुलताँ क़ुलीख़ाँ, मुहम्मदहयात, नेकनामख़ाँ, खैरूद्दीअलीख़ाँ, दिलावरख़ाँ और मुहम्मद अमावेग।

फिर बादशाह ने इन सरदारों को आगे बढ़ने की आज्ञा दी फ़र्ज़न्दख़ाँ, सलावतख़ाँ, सैफ़ख़ाँ, माज़िन्दराँपति सादात

बेटे, मीरजुमला, मीर मुकर्रम, शुजातुल्लाहखाँ, शेख रहमतुल्लाहखाँ और तैमूरखाँ। चारों ओर से घेरने के लिये बादशाह ने चार सेना भेजी।

दूसरे दिन जब बादशाह दर्बार में बैठा तो अशरफ़खाँ हाज़िर हुआ। यह सरदार मौज़ुद्दीं का साथ छोड़कर ऐज़ुद्दीन की दृष्टि बचाकर आ मिला था। इनके मिलजाने से फ़र्रुख़सियर को बड़ा हर्ष हुआ। उनको ख़ानदौरा का ख़िताब दिया गया। उसने निवेदन किया कि अब पछाँह की ओर चलिए। शुभ मुहूर्त में बादशाह ने यात्रा की। इब्राहीमहुसैन आकर मिला। उन्हें भागलपुर जाने की आज्ञा दी गई। ज़ैनुद्दीनखाँ मिला, उसे ख़ाँबहादुर ख़िताब दिया। जाँबाज़खाँ मिला, उसको सरोपाव दिया गया। फ़क़ीरुल्लाहखाँ मिला, ग़ैरतखाँ मिला। उसको पटने का सूबेदार किया। ये सब सर्दार साथ में चलने के लिये सेना सहित प्रस्तुत हुए, अलीनक़ीखाँ हुसैनअलीखाँ, इनायतुल्लाहखाँ का बेटा शुजातुल्लाहखाँ, मीरमुशर्रफ़, मीरमुहम्मद हयात, असदअलीखाँ आतिशखाँ, ख़ानदौराँ, शमसामुद्दौला, मुज़फ्फ़रखाँ, नूरुल्लाह खाँ पुत्र सहित इनायतखाँ, दोस्तअलीखाँ, वलीमुहम्मद, सादातखाँ, ख़ानज़ादखाँ, शाइस्ताखाँ, ग़ाज़ीयुद्दीनखाँ, रुस्तमखाँ दाऊदखाँ डुपट्टाबाज,तक़र्रुबखाँ, अशरफ़खाँ, अमीरखाँ, मीरखाँ, सैफुल्लाह खां, मिर्ज़ा क़ासिमबेग, सुलताँबेग, फ़तहुल्लाखाँ, अफ़रासियाब खाँ, मुहम्मद बासेहखाँ, फ़तहअलीखाँ, राजागन्धर्वसिंह, सफ़शिकनखाँ, गुलामअलीखाँ, (इनको ज़ुलफिकारखाँ ख़िताब मिला था) मुमताज़खाँ, इमतियाज़खाँ, दर्बारखाँ, मुज़फ्फ़रअलीखाँ, अकबरअलीखाँ, सैयदअनवरखाँ. ज़ब्बरअलीखाँ, बैरमखाँ, रशीद

खाँ, इलायचीबेग, (इनका खिताब बहादुर दिलखाँ था,) अख्तियारखाँ, मुखसिलखाँ ख्वाजा अब्दुल्लाह, और ख्वाजा रहमतुल्लाह।

सब सरदारों के प्रस्तुत होने पर फर्रुखसियर ने अरफ़खाँ को पेशखेमा लेकर आगे बढ़ने की आज्ञा दी। दूसरे दिन सवेरे धूमधाम के साथ बादशाह ने स्वयं कूच किया। शीघ्रता के साथ कूच करते हुए खजुरी पहुँचे, वहाँ सेना साथ लेकर आज़मखाँ आकर मिले, बहादुरपुर में मुर्तज़ाखाँ मिले, बनारस में ईद करके आगे बढ़े। फिर झूसी में डेरा पड़ा। वहाँ सैयद अब्दुल्लाहखाँ आकर हाज़िर हुए। उन्हें "कुतबुल् मुल्क" का खिताब दिया गया। और सरदारों को भी यथायोग्य मनसब और सरोपाव मिला। प्रयाग में पश्चिम की ओर से गंगाजी पर पुल बाँध कर पार उतरे। चार दिन वहाँ मुक़ाम हुआ। वहाँ फ़र्ज़ंदखाँ, सलावतखाँ, और सैफ़खाँ मिले। कड़े (मानिकपुर) के पास आकर छबीलेराम मिले। उन्हें चौहज़ारी मनसब मिला। हथगाँव में आकर अलीअसगरखाँ मिले। इन्हें चौहज़ारी मनसब मिला और इनका नाम खानज़माखाँ रक्खा गया। पूर्व ओर कुँवरपुर और पश्चिम ओर बिँदुकी गाँव के बीच में बादशाह ने डेरा डाला। वहाँ से तीन कोस पर पश्चिम की ओर फतिहाबाद और पूर्व की ओर बिँदुकी गाँव के बीच में ऐजुद्दीन ने डेरा डाल रक्खा था। दोनों दल की लड़ाई आरम्भ हुई। बादशाह ने इस लड़ाई में शाहज़ादे को सेनापति बनाया। अब्दुल्लाहखाँ और हुसैनअलीखा ने आगे बढ़ कर सेना खड़ी की। ये सब सरदार सजकर खड़े हुए—इनायतुल्लाहखाँ, शुजाअतअलीखाँ मीर मुश-

ईफ़, सैयद हयात महम्मद, मीर बुज़ुर्ग, मीर अशरफ़, सैयद फ़तेह अलीख़ाँ, सैफुल्लाहख़ाँ, असद अलीख़ाँ, जिसने आतिशख़ाँ पदवी पाया, रहमतख़ाँ (पदवी मुतहौवरख़ाँ) राजा रत्नचन्द, सैयद अनवरख़ाँ, मीर मुहसनख़ाँ, बरक़न्दाज़ख़ाँ और उसका लड़का, समुन्दरख़ाँ का लड़का, यादगार बेग का बेटा सैयद दरवेश मुहम्मद, मियाँ मंजूर, हसनख़ाँ प्रयाग के दीवान, मुज़फ्फर अलीख़ाँ तोड़ावाज़, बारहापति (सैयद अब्दुल्लाह) ज़ैनुद्दीनख़ाँ, जाँबाज़ख़ाँ, राजा छबीलेराम, अमीनुद्दीनख़ाँ, आज़मख़ाँ, गुलाम मुहैयुद्दीनख़ाँ, तक़र्रुबख़ाँ, अली असग़रख़ाँ, ख़्वाजा अब्दुल्लाह, (उनका बेटा) ख़्वाजा रहमतुल्लाह, खानदौराँ, मुज़फ्फ़रख़ाँ, नूरुल्लाहख़ाँ, शेख़ इनायतअली, दोस्त अलीख़ाँ, वली महम्मद, अकबर अलीख़ाँ, खैरुद्दीं अलीख़ाँ, दिलावरख़ाँ, शमशामुद्दौला, सादातखां, फ़र्ज़न्द अलीख़ाँ (सलावतख़ाँ का बेटा) सैफ़ख़ाँ, सादातख़ाँ के बेटे, अमीरख़ाँ के बेटे मीरख़ाँ, मीर जुमला, मीर मुकर्रम, शुजातुल्लाहख़ाँ, मीर अकरम, हलीमख़ाँ, मुमताज़ख़ाँ, सादातख़ाँ, इमत्याज़ख़ाँ, ख़ानाज़ादख़ाँ (पदवी शाइस्ताख़ाँ) ग़ाज़ियुद्दीँअलीख़ाँ, रुस्तम ख़ाँ, दाऊदख़ाँ (दुपट्टावाज़) सुलताँबेग, क़ासिमबेग, फ़तहुल्लाहख़ाँ फ़तेह अलीख़ाँ, अफ़रासियाबख़ाँ, बासेख़ाँ, दरबार ख़ाँ, अरसलाख़ाँ, सैयद मुर्तजाख़ाँ, राजा गन्धर्वसिंह, अनवर ख़ाँ, ज़ब्बरख़ाँ, मिर्ज़ा फ़कीरुल्लाहख़ाँ, इफ़तख़ारख़ाँ, मुखलिस ख़ाँ, सफ़शिकिनख़ाँ गुलामअलीख़ाँ, वैरमख़ाँ, रशीदाख़ाँ, और इलायची बेग (पदवी बहादुर दिलख़ाँ) फ़र्रुख़सियर ने और चारो ओर सेना बाँट दी, स्वयं घाटी रोक कर खड़ा हुआ, घोर युद्ध हुआ। ऐज़ुद्दीन की सेना भागी। खूब लूट हुई। सब लोगों ने बधाई दी।

इमतियाज़खाँ ने निवेदन किया कि अबुलसमुद अलीखाँ, राजेख़ाँ, सादिक़खाँ लुतफुल्लाहख़ाँ, और दिलेरख़ाँ आदि मौज़द्दीन के विश्वासपात्र सरदार थे, पर कोई न ठहर सके। एज़द्दीन को लेकर भाग गए। बादशाह ने मुमताज़ ख़ाँ को बुलाकर आज्ञा दी कि बहुमूल्य शराब, हाथी, घोड़े, तोप और नगाड़ा रखकर और जो वस्तु जिसने लूट में पाई हो वह उसको देदो।

दूसरे दिन दर्बार हुआ, मुज़फ़्फ़रख़ाँ को ख़ानेजहाँ बहादुर का और रहमत खाँ वलीअहद को मुतहौवर खाँ का खिताब दिया गया और सब सरदारों को बहुत कुछ इनाम मिला। चार दिन बादशाह ने वहाँ रहकर विश्राम किया। फिर शाहमदार के नगर में पहुँच कर ज़यारत की। वहाँ दस दिन डेरा रहा।

मीर जुमला ने दिल्ली से अर्ज़ी भेजी। मुमताज़ख़ाँ ने बादशाह को वह पत्र दिया। तक़र्रुबख़ाँ ने उसे पढ़ कर सुनाया। सैयद अब्दुल्लाहख़ाँ का बुद्धिमान वज़ीर शिरोमणिदास कायस्थ मौजुद्दीन की सभा में मिल गया था, उसने वहाँ के सब समाचार लिखकर, कुतबुलमुल्क को लिखा कि मौजुद्दीन अभिमान में भर गया और रात दिन नशे में चूर रहता है। सारी सभा कलावंतों से भर गई है। सब के सब किसी योग्य न होने पर भी माही मरातिब, अलमपंजा, तोग, और नौबत पाकर अभिमान से फूल गए हैं, दिन रात ढोल मृदंग शराब अफ़ीम, रंडी, छोकरे, नट, कलावत की ही चर्चा रहती है लड़ाई आदि का कभी ध्यान ही नहीं है, कोकिलताशखाँ और ज़ुलफ़िक़ारख़ां ने अपने स्वाधीन सारा अधिकार कर रक्खा

है, इन दोनों में भी आपस में वैर होगया है ग़ाज़ीयुद्दीनखाँ वलीखाँ, महम्मदअली खां, अब्दुस्समुदखाँ, कमरुद्दीन खाँ ज़िक्रियाखाँ, रहमरहमाँ खाँ, और तूरानिया सभों को मीर जुमला ने मिला लिया है, ये सब लड़ाई में न लड़ेंगे।

एक दिन शराब में मस्त होकर मौज़ुद्दीन ने नवरोज़ की आज्ञा दी कि इतने ही में कन्नौज से ऐजुद्दीन के भागने का समाचार पहुँचा। सब के हाथ पैर फूल गए। मौज़ुद्दीन क्रोध से जल उठा। ख्वाजा हुसेन अपनी बड़ हाँकने लगा। आगरे में जो सब भगोड़े आए थे उन्हें आज्ञा भेजी कि सब वहीं घाट रोके बैठे रहें। वालँभपुर के नीचे तीन पुल बँधवा रक्खे जायँ, हम अभी पहुँचते हैं।

बख़्शी को बुलाकर आज्ञा दी गई कि सब तयारी तुरंत करो, सेना की तनख़्वाह दो महीने की पेशगी दीजाय, मीरमंज़िल को विदा कर दो,सब स्थानों की खबरें लो। सब अमीरों को बुलाकर आज्ञा दी कि सब प्रस्तुत हो ऐसा उपाय हो कि सवेरे ही कूच हो। झटपट आगरे पहुँचकर इटावे में बढ़कर शत्रु को रोकें। यह आज्ञा होते ही सारे नगर में कोलाहल मच गया, सब अमीर तयारी करने लगे। बड़े सवेरेही सवारी तयार हुई, मौजुद्दीनज्योंही सवार हुआ कि चारो ओर अशकुन होने लगे। शीघ्रता के साथ आगरे में आकर पहुँचे, समोगर में डेरा पड़ा, वहां ऐजुद्दीन की भागी सेना आकर मिली। मौजुद्दीन इन सभों के सामने अपनी बड़ाई हाँकने लगा, छबीलराम और अलीअसग़र को धोखा देकर शत्रु से मिलने पर क्रोध प्रकाश करने लगा। फिर सब मोहासरा किया गया। पाँच लाख सवार, दो लाख तोप और कई हज़ार हाथी ठहरे। तोप दाग़ी गईं।

पत्र कुतुबुलमुल्क को क़ासिद ने दिया, साहबराम माथुर ने उसे सुनाया अब्दुल्लाहखाँ ने पत्र लेकर फ़र्रुख़सियर को दिखाया। उत्साह के साथ कूच की तयारी होने लगी। मुहम्मदखाँ वंगश बीस हज़ार सेना लेकर मिला। अरसलाख़ाँ पेशख़मा लेकर आगे बढ़ा। सवेरे फ़र्रुख़सियर सवार हुआ। शीघ्रता के साथ रास्ता तै करके आगरे पहुँचा। इस पार इनकी सेना थी, उस पार उनकी। एक भेदिये ने समाचार दिया कि पश्चिम ओर थोड़ी दूर पर यमुना में जल पायाब है। फ़र्रुख़सियर ने शत्रु को धोखे में रखने के लिये थोड़ी सी सेना छोड़ दी और वह आप सब सेना के साथ उसी मार्ग से पार उतरा। सिकन्दरो से दो कोस पर डेरा खड़ा हुआ। यह सुन कर शत्रु की सेना में खलबली मच गई। दूसरे दिन सिकन्दरे में डेरा पड़ा, रणभूमि में दोनों दल में केवल दो कोस का अन्तर रह गया।

पूस सुदी १५ सं० १७६९ * बुधवार चौदहीं मुहर्रम सन् ११३३† हिज्री को शुभ मुहूर्त में युद्धारम्भ हुआ। सवेरे से दोपहर तक ख़ूब पानी बरसा। पानी खुलने पर घमासान युद्ध हुआ। एक पहर घोर युद्ध हुआ। (दोनों ओर के सरदारों का नाम दिया है) इधर हज़ारों की गिनती थी परन्तु उधर लाखों ही थे, परन्तु ये दृढ़ता से उनका सामना करते रहे।

---

* मिस्टर इर्विन साहब ने दूसरे इतिहासों की जाँच तथा गणित के अनुसार इस युद्ध का दिन माघ बदी १० सं० १७६९ १३ ज़ुलहिज्ज सन् ११२४ हिज्री ता० ११ जनवरी १७१३ ई० निश्चय किया है।

† इसमें लेखक का भ्रम है। तेइसा का तेतिसा लिख दिया है, पर यह भी अशुद्ध है। यह सन् ११२४ होना चाहिए।

इधर से मीर अशरफ़ बढ़े, उधर ज़ुलफ़िक़ार ख़ाँ ने सामना किया, इतने में सैयद हुसैनअली ख़ाँ पहुँचे, सहायता में इधर से अली असग़र ख़ाँ, ज़ैनुद्दीं ख़ाँ, फ़तहअली ख़ाँ, सफ़शिकन ख़ाँ पहुँचे। घोर युद्ध मचा। मीर अशरफ़ मारा गया। उसका भाई मीर मुशर्रफ़ महा क्रोध से बढ़ा। फ़तहअली ख़ाँ, सफ़शिकन ख़ाँ और ज़ैनुद्दीन ख़ाँ भी खेत रहे। उधर के भी कई अमीर मारे गए। इतने में सैयद हुसैनअली और ज़ुलफ़िक़ार ख़ाँ का सम्मुख युद्ध आरम्भ हुआ। उधर से सहायता में मुख़्तार ख़ाँ, जाँबाज़ ख़ाँ, जाँनिसार ख़ाँ, लुतफुल्लाह ख़ाँ, दिलेर ख़ाँ, आदि दौड़े। इधर से राजा छबीलेराम, आज़म ख़ाँ, सुलताँ क़ुली ख़ाँ, शेख़ रसूलख़िपत ख़ाँ ने रोका। राजा छबीलेराम का महावत मारा गया, राजा ने स्वयं हाथी को सँभाला। इतने में उनके दामाद राव गुलाब राव पहुँच गए। मुख़्तार ख़ाँ हाथी सहित काम आए। तब राजा गिरिधर बहादुर, दीवान भगवन्त राय कायस्थ का बेटा सुबंसराय, बेनीराम नागर, सैयद इमाम शेख़, अहमद ख़ाँ, शाकिर मुहम्मद, ग़ुलाम मोहैयुद्दीन ख़ाँ, सुलताँ क़ुली ख़ाँ, आदि ने धूम से धावा किया। इधर से आज़म ख़ाँ उधर से जानी ख़ाँ से घोर युद्ध हुआ। जानी ख़ाँ मारा गया। उधर से लाख सेना इधर से हज़ार थी पर हटा कोई नहीं। तब क़ुतबुलमुल्क टूट पड़े। उनके साथ महम्मद ख़ाँ बंगश, शादी ख़ाँ, राजा रतनचन्द, निज़ामुद्दीं अली ख़ाँ के दीवान जैकृष्णदास, अनवर ख़ाँ, समुन्दर ख़ाँ, मंजूर तैयब, यादगार बेग आदि थे। उधर कोकिलताश ख़ाँ, आज़म ख़ाँ पर टूटे। सैदराजे ख़ाँ, अब्दुलसमुदअली ख़ाँ, नौशेर ख़ाँ, अबुलग़फ़ार आदि ने घमासान युद्ध मचाया। क़ुतबुलमुल्क से कोकिलताश

खाँ, महम्मद खाँ बंगश से आज़म खाँ, शादी खाँ से नौशेरी खाँ, के साथ में युद्ध हुआ। उधर के सैयद राज़ेखान अब्दुस्समुद खाँ से इधर के राजा रतनचन्द भिड़े। जैकृष्णदास, अनवर ख़ाँ, समुन्दर ख़ाँ, मंज़ूर तैयब, साहबराय आदि इधर से टूट पड़े। महा युद्ध हुआ, लहू की नदी बह गई, माँस का दलदल हो गया। (यहाँ से मूल ग्रन्थ छूट गया है। लेखक जी ने और और विषय की कविता लिखनी आरम्भ कर दी है। सारे ग्रन्थ से छाँट कर इस प्रसंग की कुछ कविता देकर ग्रंथ पूरा कर दिया गया है।)

(इस युद्ध में हार कर जहाँदारशाह दिल्ली भाग गया और वहाँ जुलफ़िक़ार खाँ की निमकहरामी से फ़र्रुख़सियर द्वारा मारा गया। यह वर्णन स्थानान्तर में देखिए।)

———:o:———

फ़र्रुख़सियर का राजत्व ।

——:o:——

फ़र्रुख़सियर ने राज्य पर बैठतेही अपने सहायक सैयद अब्दुल्लाहख़ाँ और सैयद हुसैनअली को प्रधान बनाया। पहिला वज़ीर हुआ और दूसरा अमीरुलउमरा अर्थात् सेनाध्यक्ष बनाया गया ।

सैयदों ने आशा की थी कि बादशाह को अपने हाथ का खिलौना बनाकर रक्खैंगे और वह अपने महल के सुख भोगने ही में मस्त रहैगा हमलोग यथार्थ में राज्य भोगैंगे, परन्तु ऐसा हुआ नहीं । फ़र्रुख़सियर का कृपापात्र ढाके का क़ाज़ी था जिसे उसने मीरजुमला की प्रतिष्ठित पदवी दी थी । अपनी अयोग्यता और सैयदों के बल पर ध्यान न देकर, इसके बह-काने पर उसने सैयदों का जी खटका दिया ।

सैयद हुसैनअली को दिल्ली से दूर करने की इच्छा से फ़र्रुख़सियर ने मारवाड़ के राजा अजीतसिंह पर चढ़ाई करने के लिये उसे भेज दिया, उधर गुप्त रीति से राजा को लिख दिया कि सन्धि के नियमों को तै करने में समय बितावैं, पर हुसैन अली भली भाँति जानता था कि उसके आँख की ओट होने से क्या उलट फेर होजायगा, उसने झट राजा से सन्धि की बात तै कर ली, राजा ने भी अपना लाभ देखकर बादशाह के लिखने की कुछ पर्वा नहीं की ।

सैयद हुसैनअली के लौट आने पर यह अविश्वास और

भी बढ़ा। सैयदों ने अपने जीवन की जोखें देखकर अपनी सेना को अपने महल के पास इकट्ठा किया और दर्बार में हाज़िर होना अस्वीकार किया। निकट था कि दिल्ली के भीतर घोर युद्ध होजाता, परन्तु किसी तरह इन नियमों पर यह झगड़ा मिटा कि मीर जुमला विहार का सूबेदार होकर जाय दिल्ली में न रहै, सैयद अब्दुल्लाह अपने वज़ीरी के पद पर रहैं और सैयद हुसैनअली दक्षिण की सूबेदारी पर जाँय। हुसैन अली ने चलने के समय बादशाह से स्पष्ट कह दिया कि यदि मीरजुमला फिर बुलाया गया और मेरे भाई के अधिकार में किसी प्रकार का अन्तर पड़ा तो मैं तुरन्त तीन सप्ताह के भीतर दक्षिण से दिल्ली आ पहुँचूंगा।

फर्रुखसियर का जी हुसैनअली से खटकता रहा उसने गुजरात के सूबेदार दाऊदखाँ पन्नी को लिखा कि वह मरहट्ठों से लड़ने के बहाने से हुसैनअली को बुलावै और छल से हुसैनअली का बल क्षीण करे। दाऊदखाँ की वीरता प्रसिद्ध थी इसलिये बादशाह ने उसपर भरोसा किया था। दाऊदखाँ ने हुसैनअली से प्रगट रूप से शत्रुता आरम्भ की और उसे लड़ने के लिये ललकारा। इस लड़ाई में दाऊदखाँ के सिर में गोली लगी और वह मारा गया, हुसैनअली ने बादशाह की आज्ञा की बाट न देखकर मरहट्ठों पर चढ़ाई कर दी।

इधर मुसलमानों के आपस के वैर विरोध से सिक्खों ने बल पकड़ा। गुरु बन्दा इनका सरदार था। इनके विरुद्ध अब्दुस्समदखाँ की नायकता में सेना भेजी गई। बन्दे की हार हुई, बहुत से सिक्ख मारे गए। बन्दा दिल्ली भेजा गया, ऊँट पर चढ़ाकर वह और उसके साथी नगर में अपमान के साथ घुमाए गए, उसके सब

साथियों का सिर काट कर लटका दिया गया, बन्दे को अनेक प्रलोभन दिए गए पर वह तनिक न डिगा अन्त में उसका छोटा बच्चा उसके सामने हलाल किया गया और उसका कलेजा बन्दे के मुँह पर मलागया। पर बन्दे ने उफ़ भी न किया और शत्रुओं के हाथ से टुकड़े टुकड़े कर दिया गया।

उधर दाऊदख़ाँ के दाक्षिण से बुला लिए जाने पर मरहटों ने सिर उठाया, चिनकिलिचख़ाँ (जिनका नाम पीछे से निज़ामुलमुल्क या आसिफ़जाह की पदवी से प्रसिद्ध हुआ) भेजे गए, उनको हटाकर हुसैनअलीख़ाँ भेजे गए, इन उलट फेरों से और भी मरहट्टों का बल बढ़ने लगा, छोटे छोटे सरदार जहाँ जो पाते उसे दबाने और दृढ़ क़िले बनाने लगे।

दाऊदख़ाँ के दबाने के पीछे, मरहट्टों पर धूमधाम के साथ सेना भेजी गई, मरहट्टों ने यह किया कि जिधर से शाही सेना गई उधर के गाँव ख़ाली करके भागगए और ज्योंही सेना आगे बढ़ गई त्योंही फिर सब अधिकार कर लिया। जब विजय के अभिमान में फूलकर शाही सेना इधर उधर तितर बितर हो गई तो मरहट्टों ने एक साथ उनको धर दबाया और सभों को काट डाला, हुसैनअली को दबाने के लिये स्वयं फ़र्रुख़सियर मरहट्टों को उभाड़ता रहा, इस तरह पर सेना के नाश और बिना दिल्ली गए अनिष्ट की आशङ्का से हुसैनअली ने साहूजी से सन्धि करली और दस हज़ार महाराष्ट्र सेना साथ लेकर दिल्ली आया, फ़र्रुख़सियर को यह सन्धि अस्वीकृत थी, इससे बादशाह और सैयदों के बीच में और भी विरोध बढ़ा।

इधर मीरजुमला का एकाएकी दिल्ली में आना और

एक काश्मीरी पर, जिसको रुक्नुद्दौला की पदवी मिली बादशाह का विशेष अनुग्रह होना सैयद अब्दुल्लाह को विशेष खटका, बादशाह ने वज़ीर के शत्रुओं से मेल बढ़ाना आरम्भ किया। आमेर के राजा जयसिंह इनमें प्रधान थे, परन्तु और सब सरदार काश्मीरी की प्रधानता से चिढ़ गए थे, वे सब के सब वज़ीर से मिल गए, इधर हुसैनअली भी अपनी सेना के साथ दक्षिण से आगया, राजा जयसिंह ने वज़ीर से साम्हना करने के लिये बादशाह से कहा, परन्तु उसको खुला खुली वज़ीर से बैर प्रगट करने का साहस न हुआ। इधर वज़ीर और उसके भाई ने नगर पर अधिकार करलिया और फ़र्रुख़सियर को ढूँढ़कर पकड़ लिया और गुप्त रीति से मरवा डाला।

सैयदों ने शाही घराने के एक शाहज़ादे को रफ़ीउद्दरजात के नाम से गद्दी पर बैठाया परन्तु वह तीनही महीने में मर गया, इसके पीछे एक वैसाही शाहजादा, रफीउद्दौला के नाम से गद्दी पर बैठाया गया पर वह और भी थोड़े दिन में मारा गया। अन्त में रौशनअख्तर नामक एक युवक शाहजादा गद्दी पर बैठाया गया और वह मोहम्मदशाह के नाम से दिल्ली के तख्त पर विराजमान हुआ।

——:o:——

ग्रंथ और ग्रंथकर्ता।

प्रसिद्ध कवि श्रीधर उर्फ़ मुरलीधर के ग्रंथ तथा कविता का संग्रह मुझे मित्रवर बाबू जगन्नाथ दास (कवि रत्नाकर) से मिला था। यह कवि अच्छा सुकवि था। इसके कई ग्रंथ और स्फुट कविताओं का इस प्रति में संग्रह है। एक ग्रंथ इसमें राग रागिनियों का है, एक नायिका भेद का, एक जैनियों के मुनियों के वर्णन का, कुछ स्फुट श्रीकृष्ण चरित्र की कविता, कुछ चित्रकाव्य, फ़र्रूख़सियर का जंगनामा और उस समय के अमीर, राज्यकर्मचारियों तथा राजाओं की प्रशंसा की कविता हैं। इनकी कविता से विदित होता है कि यह कवि बड़ा सज्जन और खुशामदी था और लोगों की बड़ाई गा गा कर कविता करते फिरने का इसका व्यवसाय था।

नावाव मुसलेहख़ाँ की प्रशंसा की बहुत सी कविता इसने की है। उनकी होली का वर्णन तथा उनकी रसिकता और विलासिता की बड़ी प्रशंसा की है। लोगों के यहाँ लड़का होने पर तथा विवाहादि में पहुँचना और कविता सुनाना इसका काम था।

बाबू शिवसिंह तथा डाक्तर ग्रिअर्सन ने इनके बनाए कवि विनोद का वर्णन किया है और लिखा है कि वे और कवि मुरलीधर मिलकर कविता करते थे परन्तु ऐसा नहीं है, जंगनामे से यह स्पष्ट हो गया कि श्रीधर का ही प्रसिद्ध नाम मुरलीधर था और वह प्रयाग में रहता था। डाक्तर ग्रिअर्सन

ने इनका समय सन् १६८३ लिखा है परन्तु जंगनामा संवत् १७६९ (सन् १७१२-१३) में बना है अतः मिस्टर इर्विन ने इनका समय कम से कम तीस वर्ष पहिले मानना उचित समझा है।

प्रयाग में एक कवि मुरलीधर मिश्र भी हुए हैं। इनका भी ठीक इन्हीं का सा स्वभाव तथा व्यवसाय था। इनका बनाया रामचरित्र नामक ग्रंथ हस्तलिखित प्रयाग के भारती-भवन में संरक्षित है। मैं ने उसका वृत्त लिख लिया था उसे प्रकाशित करता हूँ। यह ग्रंथ संवत् १८१८ में बना था। कवि ने लिखा है कि सब जन्म स्वार्थ में बिताकर अब यही निश्चय करके कि अंत में राम के गुण गाकर परमार्थ सिद्ध करना चाहिए, इस ग्रंथ को बनाया। यह दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के दर्बार में था। जब नादिरशाह ने लूट मार कर दिल्ली को तहस नहस कर दिया तब यह भी उदास होकर रामचरित्र वर्णन में प्रवृत्त हुआ। इन्हों ने अपनी वंशावली का वर्णन इस भाँति से किया है कि यमुना गंगा के बीच (प्रयाग ?) एक गाँव है वहाँ परमानन्द नामक बड़े पंडित थे। उन्हें अकबर ने अपने दर्बार में स्थान दिया था और प्रसन्न होकर शतावधानी की पदवीं दी थी। उनके बेटे कपूरचन्द, उन के पुरुषोत्तम (ये बड़े कवि थे, और शाहजहाँ के समय में राज्यमान्य थे) उनके प्रेमराज, उनके पृथ्वीराज (ये बड़े कवि थे) उनके दिनमणि (ये बड़े प्रसिद्ध ज्योतिषी थे) उनके कई बेटों में यह मुरलीधर हुए।

मिस्टर इर्विन की ओर से मौलवी अबदुल अज़ीज़ नामक एक सज्जन भितरी जिला ग़ाज़ीपुर के रहने वाले प्राचीन

ग्रन्थोँ का संग्रह करते फिरते हैँ, उन्होँ ने पहिले इस ग्रंथ तथा इसके साथ की बहुत सी कविताओँ की नक़ल कराई और मिस्टर ईल्स साहब जज के द्वारा यह ग्रंथ लिया, परन्तु मुझे खेद है कि उन्होँ ने इर्विन साहब को लिखा कि यह ग्रंथ राधाकृष्णदास से बड़ी कठिनता से ईल्स साहिब की कृपा से मिला। साहब ने इस ग्रन्थ को एशियाटिक सोसाइटी मेँ छपवाया। उसी की भूमिका मेँ उन्होँ ने यह वृत्तान्त लिखकर मिस्टर ईल्स को विशेष धन्यवाद दिया है। अस्तु इर्विन साहब ने इस ग्रंथ का बहुत सा अंश छोड़ दिया है।

इर्विन साहब ने लिखा है कि इसमेँ कई एक ऐतिहासिक घटनाएँ बहुतही अशुद्ध लिखी हैँ, और यह सैयद अबदुल्लाह का पटने मेँ रहना जब कि वह इलाहाबाद मेँ था, मीर जुमला का मौज़ुद्दीन से लड़ना सर्वथा अशुद्ध है और लड़ाई का दिन और संवत् अत्यन्तही अशुद्ध है। पहिली घटना के सम्बन्ध मेँ यह कहा जा सकता है कि कदाचित् सैयद अबदुल्लाह दो एक दिन के लिये इलाहाबाद से पटने आए होँ तो क्या आश्चर्य था क्योँकि प्रयाग और पटने मेँ इतनी दूरी नहीँ है कि आना कठिन हो। दूसरी घटना मेँ साहब को ग्रंथ के अनुवाद मेँ भ्रम हो गया है, मूल ग्रंथ (पंक्ति ३०) मेँ लिखा है—

तहँ मीर जुमला बीर बुद्धि गँभीर बाहु बिसाल।
मड़ि रह्यो मौज़ुद्दीन की कटक गहि करवाल॥

यहाँ "मड़ि" रह्यो का अर्थ मिल रहा है अर्थात् मीर जुमला छल से मौज़ुद्दीन से मिल गया था और वहाँ के समा-

चार फर्रुखसियर को लिखता था, साहब ने इस पद का अर्थ किया है—

The Mir Jumalah, a noble, clever, deep, strong of arm, Fought Mauzuddin's army, grasping the sword.

दिन और संवत में कुछ तो लेखक को भ्रम हो सकता है और कुछ यह भी सम्भव है कि युद्धारम्भ के कुछ पहिले ही शुभ मुहूर्त्त में यात्रा की हो और उसी का वर्णन किया हो, परन्तु ग्रंथ के वर्णन से यह स्पष्ट है कि कवि स्वयं आँखों देखी घटना कहता है, इस बात को साहब भी मानते हैं वह लिखते हैं—

On the other hand some of the details as to localities add to our previous knowledge, and the copious use of actual names, shows to my mind, that the author either was present in the army or wrote immediately afterwards.

जो कुछ हो यह ग्रंथ विशेष उपयोगी समझकर प्रकाशित किया गया है, आशा है कि इससे पाठकों को मनोविनोद हो।

२०-१२-१९०४ श्री राधाकृष्णदास।

फर्रुख़सियर का

जंगनामा ।

दोहा ।

सुमुख कपिल एक रद विकट, भालचन्द्र गणनाथ ।
लंबोदर शंकर—तनय, आठ सिद्धि पद साथ ॥
लंबोदर शंकर शिवा, वटुक बीरवर पाइ ।
कवि श्रीधर कीन्ही कथा, गुरु सारद पद ध्याइ ॥
श्रीधर मुरलीधर उरुफ, द्विजवर वसत प्रयाग ।
रुचिर कथा यह शाह की, वढ़्यौ कथन अनुराग ॥
फरुक-सियर से साह को, वरनों प्रवल प्रबंध ।
अरु करतूतें सबन की, जे अमीर सम कंध ॥
चीठी चली महाजनी, भई एकाएक चाह ।
छाड़ि देह सुरलोक को, गए बहादुरसाह ॥१०॥
सुनी खबरि एकबारगी, फरुकसियर उदार ।
राखि फौज अलगारहीं, चलिये यहै विचार ॥
बकसी आजमखान को, कीन्हो हुकुम बुलाइ ।
फौज राखिए जाय अब, जेती राखी जाइ ॥
फेरि खबरि दिन दसक में, साँची पहुँची आइ ।
जुलफिकार उमराव सब, मिले मौजदिहिं जाइ ॥
जुलफिकारखाँ फोरिं सब, फौज दगा किय भंग ।
नातरु वैसे वलिन्ह सों, को जीतत सफ जंग ॥
मौजदीन सिर छत्र धरि, कुतबा कुटिल पढ़ाइ ।
चल्यो दिल्ली को चहुँ दिसा, लिखि फरमान पठाइ ॥२०॥

तोमर छन्द ।

यह खबरि पहुँची तत्थ । तब फरुकसियर समत्थ ॥
सिगरे बुलाइ अमीर । सब सों कृपा करि बीर ॥
सब सौं दियो फरमाइ । अब फौज राखहु जाइ ॥
यह हुकुम करि सुभ बखत । धरि छत्र बैठो तखत ॥
सब साह के दिल सोज । तब लगे राखन फौज ॥
सजि अब्बदुल्लह खान । किय प्रथम कोपि पयान ॥
हुअ साह को इरशाद । पहुँचो इलाहाबाद ॥
सूबा व मय सरकार । सब कियो अमल उदार ॥
रनबाँकुरा बलवान । करि रह्यो कायम थान ॥

छन्द ।

तहँ मीरजुमिला मीर बुद्धि गँभीर बाहु बिशाल ॥ ३० ॥
मड़ि रह्यो मौजुद्दीनही की कटक गहि करवाल ॥
सूबा सबै मनसूब बाज बिडारि डारी चाल ।
अरु साहि को सिगरी हकीकत लिखत तब ततकाल ॥
तब मीरजुमला बीर अरज लिख्यो सुपत्र उदार ।
इन सैदराजे खान कीन्हो प्राग सूबेदार ॥
वह चल्यो साजि हिरौल आगे सैद अबुलगफ़ार ।
पीछे पठायो महा दल दै ऐजुद्दीन कुमार ॥
यह मीरजुमिला वीर की सब अरज पहुँची तत्थ ।
शाहानशाह जहाँपनाह सु फरुकसियर समत्थ ॥
सुनि कै अमीरन ओर हेर्‍यौ कोपि कै समरत्थ ॥ ४० ॥
बोल्यो हुसेन अलीयखाँ रनबाँकुरा गजहत्थ ॥
इकबाल शाहनशाह की इसमें न आन की आन ।
उनको अकेलो वै सैयद अब्बदुल्लह खान ॥

तिनको कृपा करि वेग सो लिखि भेजियो फरमान ।
वह मारि फौज बिदारि दल रन मारिहै घमसान ॥
शाहानशाह लिख्यो जबै फरमान पहुँचो आइ ।
तब सैद अब्दुल्लाहखा लीन्हों सु अदब बजाइ ॥
वह हुकुम सिर धरि दै नगारो सुमिरि प्रभु को पाइ ।
डेरा सु आलमचंद करि अरि राह रोक्यो जाइ ॥
पुनि आय थिर करि रह्यो थानो गह्यो प्राग करार ॥ ५० ॥
भाई पठायो जंग को सब संग दै सरदार ॥
तब सज्यो सैफुद्दीँअलीखाँ बंक बीर उदार ।
भाज्यो निजामुद्दीँ-अली-खाँ कोपि गहि करवार ॥
साज्यो सिराजुद्दीँ-अली-खाँ बीर औवल बान ।
फिर सज्यो राजा रतनचंद गयंद गहि किरवान ॥
फिर मीर मुहसनखान साज्यो बीर अनवर-खान ।
साज्यो समुंदर-खान अरु इदगारबेग जवान ॥
मिरजा वली बहरामबेग चढ़्यो गहे कर चाप ।
जेहि बाप बरकंदाजखाँ सु खिताब पायो आप ॥
अरु सज्यो त्यों दरवेशअली खाँ सैद बीरत छाप ॥ ६० ।
साजे वली सरदार केते शत्रु दारन दाप ॥

हरिगीतिका छन्द ।

इत अड़े आलमचंद उत कोह उन डेरा कियो ।
भिनसार होत दुहूँ दिसा दुहुँ दलपती डंका दियो ॥
इत ए बढ़े उत वे चढ़े मन बढ़े दुहुँ बागैं लियो ।
दलभार सो बिकरार महि रजधान सूरज जो पियो ॥
तब भयो देखा देख दुहुँ दल दुहूँ दल चापैं चढ़ीं ।
बाजीं बँदूखैं रहकले हथनाल घूम घटा मढ़ीं ॥

तब विज्जु चमकनि झमकि त्यों शमशेर म्यानानि तें कढ़ी ।
लागी झराझरनानु गटपट रुधिर की सलिता वढ़ीं ॥
ललकारि हाकनि दंत सावत दपटि दुहुं दल धावहीं ॥ ७० ॥
गरबी मगरबी कर गहे झुकि झपटि चोट चलावहीं ॥
छिन जात धाइ उठाइ ए छिन अटल अरिवर आवहीं ।
द्विपहर उसल्ल पसल्ल भट रनसिन्धु पार न पावहीं ॥
कहुं लरत सैयद बारहापति रतनचंद कहूँ लरैं ।
कहुं लरत बरकंदाजखाँ कहुं मीर मुहसनखाँ अरैं ॥
कहु लरत अनवरखाँ समुन्दरखाँ कहूँ पैजे करैं ।
बाँटी लराई लरत कहुं इदगारबेग रिसै धरैं ॥
जब लख्यो उसला पसल सैफुद्दीँअलीखाँ कोप कै ।
दौर्‍यौ सु निजमुद्दी -अली-खाँ फौज को आटोप कैं ॥
आगे सिराजुद्दीँ-अली-खा मुँज्यौ रन चित चोप कै ॥ ८० ॥
बिकरार अरिदल बीच अंगद सो रह्यो पद रोप कै ॥
तब बीच सैयद भए चहुदिसि लियो फौजन घेरि कै ।
तरवार तिहुँ भाइन गही हरखित हरीफन हेरि कै ॥
मृगराज ज्यों मृगझुंड पर झहरात हगनि तरेरि कै ।
भारी भमाभम शत्रु के सिर पर सिरोही फेरि कै ॥
तेहि बीच झुकि पर ओर तें तरवारि झम झम झम परी ।
झर लगी तीरन की महा मनु लगी सावन की झरी ॥
तब सिराजुद्दीँ-अली खान की देह घन घायनि भरी ।
भुव गिरत गिरत मचाइ राख्यो लोह वार कराकरी ॥
यह बारहे के बालकनि को लखो अति गाढ़ो हियो ॥ ६० ॥
सैयद सिराजुद्दीं अली खाँ तब शराहत को लियो ॥
हरखंत हूरनि हाथ को पुर प्रेम सौं प्याला पियो ।
करि हाल निअकहलाल ओप सिपाह सूरनि को दियो ॥

यह शोर भो चहु ओर तें दौरे सबै सरदार हैं।
तित डारि ढालैं टारि कूटैं फारि जिरह अगार हैं॥
अरु छोरि बखतर तोरि म्याननि गह्यो करनि कटार हैं।
चमकैं चहूँ नेजा सुनै झमकैं घनी करवार हैं॥
इमि दौरि कै चहुँ ओर तें पर फौज घेरी जाइ कै।
तह तीर बरछा बान गोली अंग अंग अँगाइ कै॥
शमशेर वार झरा झरी कर कर कटारिन घाइ कै॥ १०० ॥
झुकि झपटि झुरमुट खेलि अरिदल दियो महि बिथराइ कै॥
लोटैं किते भूमें परे कोउ घाइ सों घूमें खरे।
कोउ भए मुरछावंत डर सों ते विना मारे मरे॥
सरदार अबुलगफार के अंग अंग घन घायनि भरे।
रनभूमि में पायो नहीं जानै कहाँ किहि लै धरे॥
इमि कूटि भटकनि कटक लूटनि लगे दरबर वे दरा।
जिहि पाय में पनही नहीं भए स्वार तेऊ पैदरा॥
बाजे जसीले शाइना में धमक सों धमकैं धरा।
फर मैं फतूहनि लै फिरैं जस जग्यो सावँत सैदरा॥
कुतुबुल्-मुलुक सों तब मिआँ मंजूर अरज सबै कियो॥ ११० ॥
बाजे नगारे गहगहे आनंद सों हरख्यो हियो॥
सुनि कै सिराजुद्दीं अली खाँ की दसा गुस्सा कियो।
आखे करेरी ऐंठि मोछनि दाँत ओठनि मैं दियो॥
बोले सु अब्दुल्लाह खाँ अब मैं महा रन माँड़िहौं।
सिगरी पछाहीं फौज को कर कर कटारिन काँड़िहौं॥
आए जिते सरदार ह्वै तेहि प्रान डाड़नि डाँड़िहौं।
तब सिराजुद्दीं अली खाँ को वैर लैके छाड़िहौं॥
रन खेत में कुरु खेत सों तरवारि मार मचाइहौं।
भुज जोर तें पर ओर के सब जीवतै गहि ल्याइहौं॥
तब शाहि फर्रुकसियर को बंदा बनैत कहाइहौं॥ १२० ॥

फिरि मीर सैफुद्दी अली खाँ फतह कै आए जबै।
आए सबै सरदार निजमुद्दी अलीखाँ संग तबै॥
आए सबै सरदार सुन्दर जैत वर सोभा फबैं।
तब लियो कंठ लगाइ कुतुबुल् मुलुक बीर लबी सबैं॥
काहू दए हाथी बड़े घोरा घने काहू दिए।
काहू इजाफो चाउ सिगरे सरोपाएनि सों हिए॥
काहू सु मनसब की उमेदन मोहि मन सबके लिए।
एहि भाँति करि सनमान डेरनि बीर वरन बिदा किए॥
दिन और कुतुबुल् मुलुक बोले बोलि साहिबराय सों।
लिखि अरज शाहनशाह को सब भेद बात बनाय सों॥ १३० ॥
भाई हुसेन अलीय खाँ कों लिखो सब समुझाइ सो।
जिहिं आइ ह्यॉं अलगार पहुँचै साजि फौज उपाय सो॥
सुनि लिख्यो साहिबराय माथुर अरज पत्र तहाँ तबै।
सफजंग की सब बात जैसी भई जौन जहाँ जबै॥
फूटनि पछांहीं फौज की आमद अमीरन की सबै।
फिरि लिख्यौ और लिख्यौ हुसेन अलीय खाँ जू को सबै॥
एजुद्दी अलगार पहुंचो कोरड़े डरो दियो।
राजा छबीलेराम कपट मिलाप अब उनसों कियो॥
कपटै इँटाएँ अली असगर खान आगे ह्वै कियो।
उत बात हीं सों मिले दोऊ प्रान तन मन ह्यां हियो॥ १४० ॥
अब जैनदी खां फूटि आयो बीर बाँके साज है।
आयो वली जाँबाजखाँ वैरी बटेरनि बाज है॥
आयो मुजफ्फर अली खाँ बानैत तोरा ताज है।
आयो फकीरुल्लाह खाँ महपार खाँ अरिगाज है॥
ए सकल खां ह्वै मिलत मोहिं पयान पटना को कियो।
सब चरन प्रभु के देखिहैं वर बंदगी जिनकी लियो॥
फिरि अरज इबराहिम हुसेनहि सों सबै काहि मैं दियो।

अब आइबो अलगार होइ उमेदवार यहै हियो ॥
यह अरज पत्र सबै लिख्यो पटना सु पहुंच्यो जाइकै ।
पहिले हुसेन अलीय खाँ लीन्हाँ लिखा सुख पाइ कै ॥ १५० ॥
बाँच्यो सिराजुद्दी अलीखाँ की दसा पछताइ कै ।
रिस घोटि अरज पढ़्यो सु आपुहिं शाहि के ढिग आइ कै ॥
कीनो अमीरुल उम्मराव सु अरज शाहनशाह सो ।
रिस रहति रोकी नाहिँ क्योंहूँ अनुज के दुख दाह सो ॥
पाऊँ हुकुम अलगार पहुँचों जंग जैनक चाह सों ।
ललकारि कै छुछुकार फेरों सेज दीनहिँ राह सों ॥
तब हुकुम कीन्हो शाह दिन द्वै अब तहम्मुल कीजिए ।
बाँके बनैत अमीर तिनको विदा आगे दीजिए ॥
अब ऐजुद्दीँ सोँ रिस कहा तद्बीर सो गहि लीजिए ।
मौजदीँ पर साजिके चतुरंग फौज चलीजिए ॥ १६० ॥

पादाकुल छन्द ।

और रोज भिनसार भयो जब ।
सज्यो शाहि दीवानखास तब ॥
मिसिल मिसिल ठाढ़े अमीर सब ।
लियो मुरुतुजाखान वली अब ॥
सैद मुरुतुजा खां बढ़ि आयो ।
शहनशाह तासोँ फरमायो ॥
फौज साज चाह्यो चित लीजे ।
प्रथम पछाँह पयानो कीजे ॥
हुकुम होतही चले महाबल ।
सैद मुरुतुजाखान साजि दल ॥ १७० ॥
कूच कूच अलगार पयानो ।
कियो बहादुरपुर थिर थानो ॥

हजरत हुकुम फेर यह कियो।
बिदा सु आजमखाँ को दियो॥
आजमखा बकसी बिशाल बल।
चढ़्यो साजि चतुरंग दीह दल॥
साले खाँ महमद शुजा सबल।
महमदसेन हुसेन सज्जि दल॥
तईनात केते अमीरबर।
चल्यो तेज सफजंग जैतबर॥ १८० ॥
सज्यो गुलाब मेहदीखाँ तहँ।
आजम खाँ को अनुज जंग कहँ॥
आजम खाँ के अनुज चारिये।
बीर जैत बर और चारिये॥
साज्यो मीर अजजि खान जब।
सुबलि हेम खाँ लिय सनाह तब॥
सुलताँ कुली खान जब सज्जिय।
तब महमद हयाति गल गज्जिय॥
नेकनामखाँ बीर बंक मन।
सज्यो खैरुदीँ अलीखान रन॥ १९० ॥
सज्यो दिलावर खाँ दिलेर जहँ।
अधिर महमद अमावेग तहँ॥
तईनात एते अमीर बर।
चल्यो तेज सफजंग जैत बर॥
कियो हुकुम फिर बादशाह तहँ।
फर फाजिल फरजंदखान कहँ॥
सज्यो सलावतखान बोल लहि।
सैफखान भो बिदा सैफ गहि॥

सजे नंद सादाति खान के ।
ईरापति माजिंदरान के ॥ २०० ॥
जैतवार किरवान वान के ।
वीर सबै जग के गुमान के ॥
तईनात उमराव राव अति ।
गनी जाति ना वीर भीर अति ॥
वीर मीरजुमला कृपान लिय ।
जत्थ तत्थ रन पत्थ वीर विय ॥
वीर मुकर्रम मीर लोह घन ।
जंग मीर अकरम उछाह मन ॥
शुजा शुजातुल्लाह जंगमन ।
सगी वेग सफजंग संग तन ॥ २१० ॥
शेख रहमतुल्लाह वीर तति ।
चल्यो साजि माजिंदरान पति ॥
सजे संग सब जंग जैत वर ।
चले साजि दल बल पछाँह पर ॥
पूर्व सिन्धु दक्खिन समुद्र तहँ ।
सजि भेज्यौ तैमूरखान कहँ ॥
चहुँ ओरनि यों फौज रेल भरि ।
और रोज बैठे देवान करि ॥
आयो अशरफ़ खाँ अमीर तहँ ।
अलगारनि तजि मौजदीन कहँ ॥ २२० ॥
ऐजुदीन को दल मझारि करि !
काढ़ि आयो कर वर कृपान धरि ॥
किय मुलाजिमत पादशाह सों ।
भऱ्यो अंग आनंद उछाह सों ॥

पादशाह अतिही कृपाहि किय ।
ताहि खान-दौराँ खिताब दिय ॥
कियो आज तिन सज सलाह तब ।
अलगारनि चलिए सिताब अब ॥
शहनशाह तब सुदिन स्वच्छ धरि ।
बसे और थल पै पड़ाव करि ॥ २३० ॥
भयो शोर चहुँ ओर जोर तहँ ।
कूच कूच अलगार पछाँह कहँ ॥
इब्राहिम हुसेन मिलियो तह ।
कियो बिदा भागलपुर तेहि कहँ ॥
मिल्यो जैनदीँ खान बीर मद ।
लह्यो बहादुरखां खिताब हद ॥
मिल्यो आनि जांबाज-खान तित ।
सरोपाउँ दीनो सुमानि हित ॥
मिल्यो फकीरुल्लाह-खान तब ।
नव मुलाजि सु सजे संग सब ॥ २४० ॥
गैरतिखान अमीर थम्भ धरि ।
पट्टन सूबेदार चारु करि ॥
अलीनकीखाँ बीर पैज करि ।
रह्यो चाहि बुनगाह खग्ग धरि ॥
सजे सूर सावंत संग बर ।
सुब अमीर बानैत जैत कर ॥
सज्यो हुसेन अलीय-खान बल ।
महाबीर उमराव अमीरल ॥
ह्वै हिरोल प्रथमहि पयान किय ।
सकल जैत सफजंग संग लिय ॥ २५० ॥

(२२७ पंक्ति) असल कापी में "अज" पाठ था ।

सुब इनायतुल्लाह खान जहँ।
शुजा शुजातुल्लाह खान तहँ॥
तसु हिरोल हुव मीर मुशर्रफ।
करत फारि सफजंग साफ सफ॥
संग मीर महमद–हयाति तसु।
सकतजंग इन रचकबीर रसु॥
बुज्रुग मीर सरफ सनाह लिय।
मीर मुशर्रफ भुज बिसाल बिय॥
असद अली खाँ युद्ध धनुक धर।
सहस शत्रु वर हतक एक सर॥ २६०॥
आतसखाँ आतस समान रिसि।
धूम धार सजि करत घोस निसि॥
इमि हिरौल सैयद पयान किय।
सजि हिरोल जिन्ह फतह संग लिय॥
बर अमीर सब शहनशाह के।
सजे संग सज्जित सनाह के॥
सज्यो खानदौरा सु बहादुर।
समसामुद्दौला सिपाह पुर॥
सज्यो मुजफ्फरखां फतूह कर।
समसामुद्दौला सु बीरवर॥ २७०॥
नूरुल्लहखां सहज साज सजि।
रखो सत्व बीरत्व जाहि छजि॥
सज्यो इनायतखां सनंद तव।
दोस्तअलीखाँ सजि सनाह सब॥

(२७१ पंक्ति) "सज सह साजे" पाठ असल में है, "सहन साज सजि" पाठ होने से ठीक होता है।

वली महम्मद कर कृपान लिय।
समसासुद्दौला पयान किय॥
सजि सादाति खान बहादुर।
जासु नंद सुव सुबे बहादुर॥
जिन जिन को तब हुकुम शाह दिय।
साजि फौज प्रथमहिं पयान किय॥ २८०॥
खानजाद खां जंग साज किय।
शाइस्ता खां जेहि खिताब दिय॥
सज्यो गाजियुद्दीनखान तब।
सज्यो और केतक अमीर तब॥
रुस्तमखां रुस्तम समान दिल।
किते और श्रीधर कर फाजिल॥
सज्यो संग दाऊद खान असु।
बान दुपट्टे बाज जासु जसु॥
सज्यो तकर्रुब खान चारु दल।
आलिम आलिमजंग बाहुबल॥ २९०॥
अशरफ खां सादर सदूर सजि।
रह्यो शुजायति इलम रोज रजि॥
जेह अमीर खां कर फतूह लिय।
काबुल अटक तुराह साफ किय॥
तासु नंद अम्मीर खान सजि।
मीर खान बहु संग तेज रजि॥
सैफुल्लहखां वीर सज्जि दल।
मिरजा कासिगबेग खां सबल॥
सुलतां बेगहिँ खाँ सनाह लिय।
फतहुल्लह खां सुरन सज्ज किय॥ ३००॥

सज्यो वीर अफरासियाब खां ।
डील पील बल कर फतूह दाँ ॥
तासु अनुज लघु मीर सज्ज किय ।
महमद वासे खाँ सनाह लिय ॥
फतह अली खाँ कर फतूह कर ।
कोप तोप आटोप संग धर ॥
गुरु राजा गंधर्वसिंह तहँ ।
सज्यो फौज सन्नाह युद्ध कहँ ॥
सज सनाह तब शिकिन खान किय ।
धनुक बान युद्धर कृपान लिय ॥ ३१० ॥
सज्ज गुलाब अलीय खान किह ।
जुलफिकार खाँ हुव खिताब जिह ॥
सज्यो बीर मुमताज खान बल ।
जंग जैत कर संग गोत दल ॥
रन हिरौल की होत ज़ुसामिल ।
फर फाजिल फतूह कर कामिल ॥
सज्यो बीर इमत्याज खान तहँ ।
बल कृपान इमत्याज तेज जहँ ॥
तासु नंद जस कंद तेज बर ।
बीर बान घन रन फतूह कर ॥ ३२० ॥
जंग साज दरबार खान किय ।
फर फतूह कर बीर संग लिय ॥

(३१० पंक्ति) हस्त लिखित में "कृन लिय" है । इसका कोई अर्थ समझ में न आने से "कृपान लिय" पाठ कर दिया है ।

(३१९ पंक्ति) हस्तलिखित में "ताज" लिखा है, किन्तु "तासु" से ठीक अर्थ होता है ।

सज्यो मुजफ्फर अलिय खान दल ।
अकबर अलिय खान सज्जितबल ॥
सबल सैद अनवर खाँ सज्ज्यो ।
ओज फौज जस रस जेहि छज्ज्यो ॥
तासु संग हुव सजि सनाह वर ।
वीरहु जव्बर खान जैत बर ॥
वैरम खाँ बाँको विशाल मन ।
सुव रसीद खां कियउ जैत पन ॥ ३३० ॥
सज इलायची वेग रुद्र रसु ।
बहादुर दिल खाँ खिताब जसु ॥
इख्तियार खाँ जंग बाज चित ।
मुखलस खाँ सज्ज्यो फतूह हित ॥
खोजे अबदुल्लाह युद्ध धन ।
खोज रहमतुल्लाह तेज तन ॥

अधमा ।

सकल मीर अमीर सज्जिय ।
अरसला खाँ को हुकुम किय ॥
पेश खानो लै पयानहु ।
कूचअलगर ठीक ठानहु ॥ ३४० ॥
अरसला खां हुकुम धारो ।
चढ़्यो साजि दल दै नगारो ॥
पेशखानो लै पयानेउ ।
पाँच कोस पयान ठानेउ ॥

(३३० पंक्ति) हस्तलिखित प्रति में "प" लिखा है, किन्तु "पन" होने से शुद्ध होता है ।

फाजर शाहंशाह साज्यो ।
सकल वृंद गयंद गाज्यो ॥
वजी नौबत गहगही तब ।
भई नौबत रावरी अब ॥
घोर धौंसा धुनि धकारत ।
फतेह फत्तेह मनु पुकारत ॥
होहु हो करनाइ वाजत ।
शहनशाहहिं सगुन साजत ॥
सगुन सो सुरनाइ बाजी ।
सिद्धि राम करी जुसाजी ॥
झारु झारु बझारु झनकत ।
खनन लागहिँ घंट खनकत ॥
फीलवार निसान झहरत ।
मनहुँ आग फतूह फहरत ॥
आतपत्र अनूप राजत ।
इन्द्र सी प्रभुता बिराजत ॥
झालरी मुकता सुलच्छक ।
मनहुँ तारा छत्र रच्छक ॥
आफताब विहाँस केँकर ।
मनहुँ रक्षक संग दिनिकर ॥
तोग सुंदर मार माही ।
सगुन की मनु देत ग्वाही ।

छप्पय ।

फ़र्रुकसियर समत्थ शाहशाहाँ दल सज्यो ।
पक्खर पक्खरि बहुल बार बारन दल गज्यो ॥

(३६९ पंक्ति) असल कापी में " खनखकत " पाठ है ।

श्रीधर धौंसा धमक घोर दसहूँ दिसान भर।
चमकत नेजे फहर बान बैरख निशान वर ॥ ३७० ॥
भुव दलत मलत अहि दिसि चलत, सक्क सोर चहुं अक्क हुव।
अति अक्क धुंधरित धूरि मढ़ि, आफताब ध्रुव लोक धुव ॥
कौन सबल बल उथपि निबल बल काहि सुथप्पिहि।
केहि महीप को मुलुक मीड़ि अब काहि समप्पिहि ॥
काहि पांय गज रज्ज करिहि केहि पील पीठि पर।
खग्ग धानिहिँ केहि थरिहिँ दरिहिँ केहि तमकि तेग तर ॥
अबहि मँड़हि खंडहि सो केहि, बड़ गढ़ गढ़पति थरथरयो।
सजि शहंशाह फर्रुक सियर, सो अब श्रीधर हय पक्खरयो ॥

दोहा।

इमि सजि शाहनशाहजू, कीनो कोपि पयान।
एलगारनि के कूच को, कियो हिये ठिकठान ॥ ३८० ॥
कूच कूच एलगार सोँ, खजुरा पहुचे आय।
आजमखाँ सज फौज सोँ, परसे प्रभु के पाय ॥
साजि बहादुर पुर मिल्यो, सैद मुरतुजा खान।
उतरि बनारस ईद करि, एलगरि कियो पयान ॥
आनि बसेरे बीच के, झूंसी कियो मुकाम।
आए संग महाबली, हटिगे निमकहराम ॥
सैयद अबदुल्लाह खाँ, की मुलाजिमत आय।
की, मुलाजिमत संगही, जेतक संग सहाय ॥
हाथी घोरे पालकी, टकी फिरंगी कोर।
सरो पाँव सरपेच सज, जेगा मन सब ओर ॥ ३६० ॥
शहंशांहि दीनो तिनै, कुतुबुलमुलुक खिताब।
दियो इजाफो जौन जेहि, मनसब को असबाब ॥

सेतु बाँधि सुरसरि उतरि, प्राग सु पश्चिम ओर।
चारि मुकाम तहाँ किए, आगे दौरादौर॥
मिल्यो तितै फरजंद खाँ, जगत जासु किरवान।
सबल सलावति खाँ मिल्यो, सैफखान बलवान॥
करे निकट महँथा मिल्यो, आइ छबीलेराम।
चारि हजारी राज पद, तिन्ह को भयो सलाम॥
अलीय असगर खान जू, मिल्यो आनि हथ ग्राम।
चौहजारि मनसब लह्यो, खानजमाँ खाँ नाम॥ ४०० ॥
पूरब छोड़्यो कुँवर पुर, पश्चिम बिँदुकी ओर।
बीच शाहि डेरा कियो, भयो दुवन दल सोर॥
पश्चिम फतिहा बाद तजि, पूरब बिँदुकी ग्राम।
ऐजुदीन डेरा दियो, सकटक किते मुकाम॥
खारबंद खंदक खनी, कटक चारिहूं कोट।
चुने अरावे अनगने, भरी फौज तिहिँ ओट॥
दुहूं महाबल फौज सों, तीनि कोस को बीच।
रची बीच रनभूमि तित, मँची दंति मद कीच॥
शाहिजादो हिरउल कियो, दलपति शाहनशाह।
सजि दलपति जित शाहिये, ते कीन्ही तित चाह॥ ४१० ॥
अबदुल्लह खा बंकरन, हुसेन अलीखां माल।
रनथंभन आगे भए, कुतुब कूड़री बाल॥

मधुभार छन्द।

सज्यो अबदुल्लाह खाँ जित।
सज हुसेन अलीय खाँ तित॥

(४११ पंक्ति) हस्तलिखित प्रति में "म" है, परंतु ४१२ प्रति के अंत के पद में "बाल" है; अतः "म" से "माल" पाठ कर दिया है।

३

तित इनातुल्लाह खान सजि ।
रिस शुजायति अलीखान रजि ॥
तित मुशर्रिफ़ मीर रिरहद ।
संग सैद हयाति महमद ॥
मीर बुजुरुक मीर अशरफ ।
फोरि डारत फरनि की सफ ॥ ४२० ॥

फतेह अली सैद संगी ।
सैफ सैफुल्लाह जंगी ॥
असद अली खाँ बीर धायो ।
अस्व आतश खाँन पायो ॥
सज्यो रहमति खाँन बल हद्द ।
मुत्तहौवर खान जेहि पद ॥
कोपि रत्तनचांद राजा ।
बारहा पति संग साजा ॥
सैद अनवर खाँ धनुद्धर ।
मीर मुहसन खाँ सज्यो फर ॥ ४३० ॥

सज्ज बरकंदाज खाँ हुब ।
बीर बरकंदाज खाँ खुब ॥
सुब समुंदर खाँ सज्यो जसु ।
नंद ज्यों इदगार बेगसु ॥
सैद श्री दरवेश महमद ।
तित मियाँ मंजूर शुभ कद ॥
हसन खाँ दीवान प्रागी ।
देग तेगहुँ कित्ति जागी ॥

सजि मुजफ्फर अली खाँ सद ।
बान तोरा बाज जेहि पद ॥ ४४० ॥

वारहाँ पति कोप छायो ।
साजि उत्तर ओर धायो ॥
जैनदीँ खाँ युद्ध योधा ।
चढ़्यो उत्तर ओर क्रोधा ॥
तितहिँ दल जाँबाज खाँ के ।
डाँकि मोरचनि वीर हाँके ॥
सजि छबीलेराम आयो ।
ओर दक्खिन धमकि धायो ॥
अमीनुदीँ खान जंगी ।
भयो दक्खिन फौज संगी ॥ ४५० ॥
पूर्व दक्खिन बीच सज्ज्यो ।
वीर आजम खाँ गरज्ज्यो ॥
सज गुलाब मोहियुदीँ खाँ ।
वीर आजम खान जेहि घाँ ॥
सज तकर्रुब खाँ सुलच्छिन ।
हाँकि जय जय जय कर च्छिन ॥
अली असगर खान जंगी ।
वारहा पति वीर संगी ॥
खोज अबदुल्लाह सज्ज्यो ।
सुब रहमतुल्लाह गज्ज्यो ॥ ४६० ॥
पूर्व उत्तर ओर रोप्यो ।
खान दौरा बहुत कोप्यो ॥
दल मुजफ्फर खान सज्ज्यो ।
खान दौरा बीर गज्जयो ॥

(४५९ पंक्ति में) "हांकि जय ज" करके छोड़ा है, हमने "हांकि जय जय जय कर च्छिन" कर दिया है ।

सज्यो नूरुल्लाह खाँ जित ।
सेखि नायतिखाँ बली तित ॥
दोस्तली खाँ शीलता हद ।
संग साज्यो वली महमद ॥
श्री मुजफ्फर अली खाँ जहँ ।
सज्यो अकबर अली खा तहँ ॥ ४७० ॥

तितहिँ खैरुद्दीँ अली खाँ ।
दिल दिलावर खाँ फतह दाँ ॥
उतहि उनको खान दौरा ।
इतहिँ सजि यह खान दौरा ॥
संग केतक खान दौरा ।
मनहुँ उनको खान दौरा ॥
सज्यो इमि समु सामुदौला ।
मड्यो रन बल बाँहु तौला ॥
पूर्व ओर अमीर जेते ।
शाहिजादे संग तेते ॥ ४८० ॥

सज्यो दल सादाति खाँ अति ।
बीरबर माजिंदखाँ पति ॥
सज्यो तित फरजिंद खा दल ।
सुव सलावति खाँ महाबल ॥
सैफखाँ गहि सैफ हांके ।
नंदसुव सादाति खाँ के ॥
मीरखान अमीर खाँ सुव ।
सज्यो तित फरजंद खाँ हुव ॥
मीरजुमिला श्री मुकर्रम ।
शुजातुल्लह मीर अकरम ॥ ४९० ॥

गरजगजे सुहलीम खाँ तहँ ।
सज्यो दल फरजंद खाँ जह ॥
संग केतक बीर बाँको ।
सज्यो दल सादाति खाँ को ॥
सज्यो श्री मुमताज खाँ दल ।
देग तेग विशाल भुजबल ॥
सज्यो दल इमत्याज खाँ तहँ ।
बीर श्री मुमताज खाँ जहँ ॥
कियो खानेजाद खाँ सद ।
भयो जेहि शाइस्त खाँ पद ॥ ५०० ॥
गाजि मुद्दी खाँ महाबल ।
तितहिं रुस्तम खान को दल ॥
सज्यो दाउद खाँ वली तेहि ।
है दुपट्टे बाज पद जेहि ॥
सैफ सैफुल्लाह खाँ गहि ।
बीर सुलताँ बेग खाँ तहि ॥
बंक कासिमबेग खाँ धुव ।
स्वार फतहुल्लाह खाँ हुव ॥
फतेह अली खाँ पयानो ।
साजि आगे तोपखानो ॥ ५१० ॥
सज्यो अकरास्याब खाँ जहँ ।
सज्यो बासै खाँ बली तहँ ॥
मड़्यो तित दरबार खाँ रन ।
जैतपत्र विशाल करि पन ॥
अरसला खाँ बीर गरबी ।
कर कमाँ कूँवर मग़रबी ॥

मुरुतुजा खाँ सैद योधा ।
बारहेँ को बीर क्रोधा ॥
राज श्री गंधर्व सिंहहिँ ।
मड़्यो पूरब ओर रन महिं ॥ ५२० ॥

सैद अनवर खाँ मड़्यो रन ।
देग तेगहु जीतियो पन ॥
दलहु जब्बर खाँ सज्यो तहँ ।
सैद अनवर खाँ बली जहँ ॥
फकीरुल्लह खान मिरजा ।
सज्यो दल रन धाक खिरजा ॥
इफ्तकारहिँ खान सज्ज्यो ।
बीर मुखलस खाँ गरज्ज्यो ॥
सफ़शिकिन खाँ बंक मनजित ।
सज गुलाब अलीय खाँ तित ॥ ५३० ॥

बीर बैरम खान साज्यो ।
रन रसीदै खाँ गराज्यो ॥
सज इलायची बेग खग गहि ।
बहादुर दिल खान पद जेहि ॥
शहनशाहि सुफौज बांटी ।
रह्यो आपुन रोकि घाटी ॥
बँटी फौजैं दिली जहँ तहँ ।
पर्यो खर भर शत्रु दल महँ ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द ।

दुहूँ ओर साजे महा मत्त दंती ।
सजे पक्खरों लक्खकी पूर पंती ॥ ५४० ॥

गड़ादार घेरैं सिरी कट्ट बंटा ।
गजैं मेघ मानो बजैं घोर घंटा ॥
घटा श्याम सी दीह ता बिंधिमा पै ।
परी पक्खरैं झालरा झूल झाँपै ॥
सजे पक्खरो भक्खरों लक्ख घोरे ।
मनो भानुजू के रथी जोर जोरे ॥
चले चाइ सों चंचले चाल बाँकी ।
दऱ्याई तुरुकी तजीले इराँकी ॥
करैं पौन सी पौन की पायदारी ।
अरब्बी गरब्बी खुरीले खँभारी ॥ ५५० ॥
नचै नाटकी से पटी के चऱ्हावी ।
कछी पीठ पूठों पले नीर रावी ॥
सजे संदली औ समुंदे सुरंगे ।
कबूतो बने फूलवारी सुअंगे ॥
सजे ओज संजाफ नीले हरीले ।
मुसुक्की सजे पंच कल्यान पीले ॥
बड़े ढील के, कान छोटे नवीने ।
सुचौरी खुरी चाकरी जासु सीने ॥
बडे चंचले नैन के, मुक्ख साँचे ।
खुरी पाल झूमै घनी दोष बाँचे ॥ ५६० ॥
सजे साजियों चारिहूँ ओर योधा ।
सजे साज लोहा बँटो क्रुत्त क्रोधा ॥
पिले चारिहूँ ओर सूबे गरूरी ।
जिन्हों बार कै शत्रु की फौज चूरी ॥
कहाँ लौं कहौं फौज में सूर राजे ।
किंतेको बली लै बँदूखैं गराजे ॥

सबै सूरवाँ बीर बाँके बनैते ।
सजे साज बाजी चढ़े हाँक दै ते ॥
कढ़े फौज सों डाँकि घोरे धपावै ।
कितै कूह कै कै सु भाले फिरावै ॥ ५७० ॥
लख्यो दूसरी ओर गाढ़ो अनी को ।
चढ़ो कोपि कै पूत दिल्लीधनी को ॥
दुहूँ ओर ठाढ़ी चमू बहि रोकैं ।
दुहू ओर की फौज ठाढ़ी बिलोकैं ॥
सु फर्रुकासियर शाहि के जोर सूबे ।
पिले चारिहूँ ओर साजे अजूबे ॥
बजी दीह धौंसानि आवाज अच्छी ।
चहूँघा लखीजे बरच्छी बरच्छी ॥
छुटे त्यों अरावे उठी धूरि भारी ।
धुवाँ की उठी धुंधुरारी अँध्यारी ॥ ५८० ॥
बढ़ै रोशनी ऊपरी बान छूटै ।
मनो आसमानी महा लूक टूटै ॥
पिले चोट कों खोट के चारि फेरे ।
पिले ओपची तोपची यों घनेरे ॥
चहूँ फौज की बीरता की बड़ाई ।
चमूँ शत्रु की चूर कै कै हटाई ॥
बली उत्तरी फौज के गर्व एँठे ।
महा मोरचा भीड़ि कै पेलि पैठे ॥
लख्यो एजुदीं बार छूटो दुवारो ।
परी भाग भाग्यो तकैं कोह नारो ॥ ५९० ॥
सँभारै न घोरे रथी हेम हाथी ।
सँभारे न कोऊ कछू संग साथी ॥

(९८७ पंक्ति में) "गव" है, "गर्व" कर दिया, इससे पाठ स्पष्ट होगया ।

किहूँ छाँड़ि घोरैनि डार्यो हथ्यारो ।
किहूँ भागि सों आगेही पत्थ धारो ॥
करै कोउ हाहा परै कोउ पैयाँ ।
चले रामरे गाँव झैझा बकैयाँ ॥
घुसे बीहरो भागि केते निकामी ।
किते को करै बंदि नामी निनामी ॥
किते को गुमानी गरूरे निछाए ।
बड़े हौंसिला कै तिया संग लाए ॥ ६०० ॥
तिन्हैं छोड़ि भागे छुटी चाल बाँकी ।
गए फूटि ताले फटी हौंस नाकी ॥
सु रोवै असीले फसीले सहेली ।
पुकारे खुदा आय दै कौन मेली ॥
गरोढा वरो झाँकि झीकैं सुरोसैं ।
सबै मौजदीं को भरे नैन कोसैं ॥
कहूँ वैदरा को बड़ी धूम धाई ।
चहूँ बुब्ब लुब्बानि लै आग लाई ॥
वरैं छावनी छाँह डेरा सु भारी ।
महा भीम फैली धुवाँ की अँध्यारी ॥ ६१० ॥
कहूँ आँच के तेज सों लाल फूटैं ।
कहूँ बैंदरा बीर बाजार लूटैं ॥
कहूँ बाँस की गाँठ फूटैं पटक्कैं ।
चटाचट्ट पाषान भारी पटक्कैं ॥
लुटै केसरौ दाख दार्यो छुहारो ।
लुटै चारु कस्तूरिका घन्नसारो ॥
कहूँ होत मोती बरैं चूर चूना ।
कहूँ लै लुटेरे करैं मोट दूना ॥
जरैं चार आचार चूरी चिरौंजी ।

कहूँ कौलगट्टे कसेरू करोंजी ॥ ६२० ॥
जरैं औ लुटैं चीर चीरा जरी के।
परे मोट के मोट लूटैं परी के॥
भए बैदरा जौहरी लूटि लूटैं।
छिटे ज्वारिलों मोट मुक्तानि छूटैं॥
किती ती जरैं हाय हा रट्ट लागी।
किती कामिनी दामिनी रूप भागीं॥

दोहा।

यहि विधि दल सब भंगियो, एजुदीन को जान।
श्रीधर कवि आगूँ सुनो, अब सब करौं बखान॥
अरज कियो इमत्याज खाँ, प्रभु को पाइ प्रसाद।
शहनशाहि यह शाहि वै, फतह मुबारकबाद॥ ६३० ॥
कियो खान दौरा हुतो, उनको अँग हरजंग।
नौसेरी खाँ नंद इत, हो हिरोल रनरंग॥
अबदुल समुद अलीय खाँ, राजे खान अमीर।
सादिक़ लुतफुल्लाह खाँ, दिल दिलेरखाँ बीर॥
मौजदीन के ये हुते, इतवारी उमराइ।
हजरति के इकबाल सौं, सके न रन ठहराइ॥
ऐजुदीन को जबरई, लै सब गए पराइ।
पान खाइ आए हुते, पानिप गए गँवाइ॥
हाथी घोड़े शुतुर रथ, महल बहल सुखपाल।
तोप नगारे रहकले, शुतर नाल हथनाल॥ ६४० ॥
मुहर जवाहिर को गनै, ढेर ठौर हीं ठौर।
ठाढ़े छुटे सराइचे, करी बैदरनि दौर॥
तहँ ठाढ़े मुमताज खाँ, हजरति निकट बुलाय।

शाहनशाहि कीनो हुकुम, तुम देखो अब जाय ॥
मद मोलक हाथी तुरै, तोप नगारा लेहु ।
और लूटि में जो लहै, तौन ताहि को देहु ॥

अर्धक ।

करि फतह शाहनशाहजू । हिय भर्‌यो परम उछाह जू ॥
बैठे प्रभात देवान कै । सब बोलियो सनमान कै ॥
तहँ बजति नौबति घोर ह्वै । रह दीप दीप अँदोर ह्वै ॥
किय कंचुकी इतमाम को । आए अमीर सलाम को ॥ ६५० ॥
मुकता जवाहिर वारहीं । अँजुरीन लै फिटकारहीं ॥
पुनि भाँति भाँतिन्ह नजरि दै । लै मिसिल ठाढ़े भे सबै ॥
कुतबुल मुलुक अरजी भए । उमराव बोलि दुवो लए ॥
मिलियो मुजफ्फरखाँ तहाँ । कीनो कृपा साहब जहाँ ॥
दीनी खिताब धुराधुरी । खाने जहान बहादुरी ॥
मिल्यो रहमतिखाँ बलीहद । मुत्तहौवरखाँ लह्यो पद ॥
फिरि शाहि बकसिस साजियो । सिगरे अमीर निवाजियो ॥
हाथी महा मद के दए । घोरे इराँक जए नए ॥
सुभ सरोपाय झलाझलीं । किय कनक बार सभाथली ॥
जेवर कलंगी झलभले । सरपेच साज भले भले ॥ ६६० ॥
शमशेर भूषन जाहिरी । सज करी फौज जवाहिरी ॥
तेहि भूमि चारि मुकाम कै । सब कटक को बिसराम कै ॥
फिरि कूच कूच लगार को । जहँ शहर शाहि मदार को ॥
पहुँच्यो तहाँ दल बीर को । किय दरस परसन पीर को ॥
दिन दस बसे तेहि थान जू । किय मेहर गरम देवान जू ॥

गीता छन्द ।

मीरजुमिला बीर उत सो अरज पत्र पठाइयो ।
कासीद कागद कर लए दरबार द्वारे आइयो ॥

मुमताजखान लिखान लै सुब शाहि पै पहुँचाइयो।
वह लै तकर्रुब खाँ तहाँ मजमून बाँचि सुनाइयो॥
आकिल वकील उदार सैयद अब्बदुल्लह खान को॥ ६७०॥
कायथ शिरोमनिदास राय महीप साड़ी थान को॥
मिलि रह्यो मजलिस मौजदीं की सचक तत्व विधान को।
उन लिख्यो कुतबुल मुलुक को सब भेद जो परवान को॥
इत मौजदीँ मगरूर मस्त अलस्त अमलैँ खाइ कै।
सिगरे कलाँवत है अमीर भरे रहे चित चाइ कै॥
आवै न आवै मननि में फूले रहे इक भाइ कै।
माही मरातिब अलम पंजा तोग नौबति पाइ कै॥
बारू सु दारू भरत गोली अमल गोली रंग की।
मिरदंग ढोलक तोप औ सुर नाइ रीत तुफंग की॥
प्याला पलीता सु भरि कै तहँ जीति मौजे भंग की॥ ६८०॥
दिन रात यह चरचा रहे ततबीर और न जंग की॥
सब कमललोचन दुक्खमोचन कामरूप अगोहरा।
अति चतुर नृत्त कलान मैं मघवान मजलिस नोहरा॥
अनुराग उपजत राग सुनि सुनि कवित रस के दोहरा।
मनु ढरे साँचे नवल नांचे नटा नट के छोहरा॥
कहुँ सभा मस्त कलावँती कहुँ पातुरन की गाँहकी।
कहुँ नचत हरखे हिँजरा झर लगी ऊहिऽरु आहि की॥
कहुँ छोकरे बागे बने दरबार कुँजरिन राह की।
यह मौजदीं की मौज है गति और नाहिँ निबाह की॥
इखत्यार कोकिलतास खाँ अरु जुलफिकारहिँ खाँ लियो॥६९०॥
दोऊ रहे बर बीर योधा बैर आपुस में कियो॥

(६९१ पंक्ति में) "दोऊ रहे वर योधा वैर आपस में कियो"। हमने "बीर" शब्द अधिक कर दिया है।

ज्यों कठिन करुई नीम रोगी मूदि आँखिन घूटियो ।
... ...
रह्यो गाजियुद्दीं खाँ वली खाँ महमदअमी खाँ फूटिहै ।
अवदुस्समुद खाँ कमरुदीं खाँ जकरिया खाँ छूटिहै ॥
तहँ रहमरहमाँ खान अरु तूरानिया सब टूटिहै ।
परपंच कीनो मीर जुमिला जंग ये नहिँ जूटिहैं ॥
इक रोज बैठे मौजदी मदिरा बढ़ायो मौज को ।
उत साह सों चित चाह भरि करि हुकुम नव नवरोज को ॥
तेहि बीच आई खबरि आए फरुख शाहि कनोज को ॥ ७०० ॥
अरु एजुदीं भागे लए हमराह सिगरी फौज को ॥
यह सुनत एजुद्दीन भाग्यो फौज संग सबै भगी ।
तहँ सकल मजलिस मौज में इक बारगी दुख सों पगी ॥
तब लगी मुख बिष सी बिरी अरु गीत गारी सी लगी ।
अँग अमल की लाली घटी ततवीर औ डर रिस जगी ॥
कहाँ लों लिखिये कथा सब रीति देखि परी नई ।
हहरे कलाँवत गिर गए मेहरान को मुरछा भई ।
कहुँ परी ढिनगत ढोलकी सुध ताल घुँघरू की गई ।
सब गयो मद छुटि छाक सो रट ऊहि आहि दई दई ।
अति रिस भर्‍यो मन मौजदीँ बकि उठत बारहिँबार है ॥७१०॥
यह काम चूक कियो दियो करि छोकरा सरदार है ॥

(६९३ पंक्ति) वाला पद हस्तलिखित प्रति में नहीं है ।

(७०२ पंक्ति में) "संगरि भषि" था, हमने "संग सबै भगी" कर दिया है ।

(७०६ पंक्ति में) "सब रीति कछु देखि परी नई" था, हमने "कछु" निकाल दिया है ।

फिर बेतमीज अमीर सिगरे लै गयो इखत्यार है।
मन मैं न आई मसलहति अपनी खता की हार है ॥
खोजा हुसेन न जंग जानत बात की कथनी कथी।
कहँ लरो लुतफुल्लाह सादिक साँचु है पानी पथी ॥
करि संग दीने और सिगरे मसलहति तिनकी न थी।
सफ़जंग जीते सैद सोँ हमराह कौन महारथी ॥
अब मैं चलो सजि सामुहैं कहि कौनऔं ठहराइगा।
मेरी अवाई सुनत सब दल एक एक पराइगा ॥
सब ओसलौं तकि उदित सूरज बूँद बूँद बिलाइगा ॥ ७२० ॥
नहिँ बचन देहौं भागेहूँ रन भागि को कित जाइगा ॥
अब भोर सोँ करि दौर पहुँचत एक एकहिँ मारिहौं।
कोउ जियत जान न पाइहै दरबार द्वार पछारिहौँ ॥
करि सेर देहौं मस अहारनि टूक टूक बँटारिहौं।
फिर बारहैं की ईंट ईंट उखारि जल मेँ डारिहौँ ॥
मेरे भुजा बल शाहिजादेन सोँ न जौन लई गई।
तरवार के बल फौज के बल हिंद की प्रभुता भई ॥
रन मारि तीनो पादशाहहिँ पादशाहति मैं लई।
सुलतान चाहत सो दिल्ली बहकाइ त्याए औरई ॥
यह हुकुम पठयो ताहि जे पहुँचे भगोरा आगरैं ॥ ७३० ॥
बैठे रहो उतहीँ सबै मिलि घाट घाट धरा धरैं ॥
पुल तीनि बेगि बँधाइयो मजबूत बालँभपुर तरैं।
इलगार पहुँचत आइहौं सफ़ जंग साज महा करैं ॥
बकसी बुलाइ कह्यो सवारहिँ साज सिगरो कीजिए।

(७३३ पंक्ति में) "सफजं साज महाकरे" है, हमने "जं" के साथ "ग" लगा दिया है।

सबको दुमाहो पेशगी गनि राति रातिहिं दीजिए ॥
करि मीर मंजिल को बिदा फिरि खबरि सब थल लीजिए।
तदबीर ऐसी साधि जो परभाति राति चलीजिए॥
फिरि हुकुम कीन्हो निकट जो सिगरे अमीर बुलाइ के।
तदबीर चलिवे की करो सब रात रातिहिं जाइ के॥
सब साजि फौज प्रभात होतहिं होहु हाजिर आइ के ॥ ७४० ॥
इलगार उतरो आगरो मारों इँटाये धाइ के॥
यह हुकुम निकसत हीं एकाएक शहर खरभर शोर भो।
साजे अमीर सजी सवारी बजी नौबत भोर भो॥
जब स्वार भो खुद घटा घुमड़ी परे पाहन घोर भो।
बद सगुन लखि सब कहैं हा यह कालिका को कोप भो॥
दाहिने खर, चील्ह सनमुख, बाम बोल्यो काग है।
अरु गई काटि गली बिली, थित राँड़ रोवत राग है॥
आतपत्र निशान खंडित दंड परम अभाग है।
जब स्वार मौजुद्दीन भो बद सगुन लागा लाग है॥
दिन कटक माँझ उलूक बोलत लूक टूटत रात है॥ ७५० ॥
कहुँ स्वान रोवत सुरनि सों कहुँ स्यारगन फिकरात है॥
मड़रात सिर पर गीध के गन यों बढ़ो उतपात है।
हहरे सिपाही सुपन में सब भागिवो बररात है॥
उतपात औ बद सगुन सिगरो मूढ़ मन बहराइ के।
इलगार पहुँचो आगरे ठहर्यो समोगर जाइ के॥
तहँ मिले एजुद्दीन औ सिगरे भगोरा आइ के।
सफ़ जंग की कथनी कथी अति बात बनक बनाइ के॥
बिकरार बोल्यो मौजदीँ अब सैयदों सो बूझिहों।
रन मारि लेउँ गनीम कोँ तब बारहाँ हिँ अरूझिहों॥
सिगरो फिसाद कियो इन्हों दिल माह कीन्ही रूझि हों ॥७६०॥

येई अगोहर जंग के इन सों लगावत लूझिहों ॥
सादादि खाँ माजिद को मन मानि नाता आवता ।
फरजंद खाँ तेहिका पिशर सजि फौज आगे धावता ॥
वह भयो जो सम सामुदौला तेग कर फर कांपता ।
रन माँझ मेरे सामुहें अब कौन धौं ठहरावता ॥
पहिले छबीलेराम एजुदीन सों मुजरा कियो ।
फिर जाइ के उतहीं मिल्यो बदबख्त मोहिं दगा दियो ॥
अरु अली असगर खाँ मिल्यो उत जाइ आगे ह्वै लियो ।
मन में न ल्याये मोजदीनहिं देखिये इनको हियो ॥
यों कहि मोहल्ला लेन लाग्यो पांच लाख सवार भो ॥ ७७० ॥
तित तोपखानो लाख द्वै गजराज कैक हजार भो ॥
फिरि करी तोपन की शलंगे गगन धूँवाँधार भो ।
धुरि धरा धसकति मेरु मसकति सबल यों दल भार भो॥
यों लिखि शिरोमनिदास राय उलाँक बेग पठाइयो ।
दरबार कुतुबुलमुलक के कासीद जोरी आइयो ॥
सब अरथ साहेबराम माथुर प्रगट वांचि सुनाइयो ।
पर सुनत नैन रँगे भये अति वीर रस चित छाइयो ॥
हँसि कह्यो अबदुल्लाह खाँ गलबा भयो उत शाह का ।
पाऊं जो अब मैं नेकहूँ करि हुकुम शाहनशाह का ॥
इकबाल फर्रुखसियर को अरु करम इक अल्लाह का ॥ ७८० ॥
रन दौरि तोरों आजुहीं बल मौजदीं की बाँह का ॥
मज़मून सुनि तजबीज करि करि फेरि अपने कर लयो ।
स्वारी तयार भई नई असवार सैयद है भयो ॥
खुशहाल मोछनि हाथ फेरत शाहि के मुजरे गयो ।
सब अरज कीन्हों अरथ शाहनशाह को हिय हरखयो ॥

(७६७ पंक्ति में) " के " अधिक था ।

वर मीरजुमिला को लिख्यो यह अरज सैद वजीर की।
दोऊ बराबर सी बिदी बर बात मीर अमीर की॥
अँखियानि सरस्यो बीर रस साहबजहाँ रनधीर की।
फर तेग बाहक हाथ फरक्यो खरी मोंछै बीर की॥
बर बारहां पति वीर सैद वजीर त्यों अरजी भयो॥ ७९० ॥
आयो महम्मद खान बंग समाज साजि नयो नयो॥
असवार बीस हजार बखतरपोश ज्यों घन ऊनयो।
सखरैत बीर बली सबै पखरैत हाथी औ हयो॥
तब हुकुम कीन्हौं शाहि फर्रुक कियो कूच करार है।
मिलियो महम्मद खाँ मोहल्ला दै चल्यो इलगार है॥
हमराह बीर अमीर जंगी साज तेज तयार है।
गहि आशला खाँ पेशखानो चलत आजु अगार है॥
स्वारी तयार भई प्रभातहिं शहनशाह सवार भो।
मिलियो महम्मद खाँ सही असवार बीस हजार भो॥
खुद आपु पंज हजार सब सरदार मनसबदार भो॥ ८०० ॥
हमराह हिरउल को कियो अलगार बीर अगार भो॥
करि कूच कूच लगार को एलगार पहुंचो आगरे।
जल पिअत जमुना को दुओ दल सबल बालमपुर तरे॥
तित पार वार मुहासरो मिलि दलप दोउ डेरा करे।
ए पेलि चाहत पार. उत वे घाट बाट धरा धरे॥
दुहुँ ओर नौबति घोर घुमरत सकल जल हल कंपिओ।
दुहुँ ओर झंडे झलमले फहरानि उडगन झंपिओ॥
रजधान भानु बिमान बिलखत आसमान सुढंपिओ।
दुहुँ ओर दल भर सहस फनिफन तुरग चंपनि चंपिओ॥
दुहुँ ओर बादल सुदल सूर मयूर ज्यों हरखा करैं॥ ८१० ॥
दुहुँ ओर तोपन की शलंगैं गाज गरज रखा करैं॥

५

दुहुँ ओर चातक पिक गुनीगन कीर्त्ति सोँ करखा करैँ ।
दुहुँ ओर गोला बान बूँदनि राति दिन बरषा करैँ ॥
दुहुँ ओर भट ठट मन बढ़े स रुजंग की अति मनमनी ।
दोउ पेलि चाहत पार भो, नित ठटत ठाट दुओ अनी ॥
लगि नीर आवत कुद्ध उद्धत दलप दोउ दिल्लीधनी ।
बिकरार धार महानदी पछतात त्यों दोऊ पनी ॥
तेहि बीच बीर वजीर सैय्यद अरज आवत ही कियो ।
प्रभुराज चच्छु प्रतच्छ लखि थल खबरि आनि हमैं दियो ॥
कछु दूर पश्चिम आगरे तहँ थाह यमुना को लियो ॥ ८२० ॥
पाँ आब पार ; पारलोँ सुनि शाहि को हिय हरखियो ॥
करि झूठ दीन्हों गुलगुला तिरि मौजदीँ उर वार भो ।
यह शोर भो चहुँ ओर जोर दिलेर दल तैयार भो ॥
कछु फौज भेजि गनीम मुख पर शहनशाहि तयार भो ।
तब राति रातिहिँ दौरि सैयद थहरि तरि करि पार भो ॥
अड़ि रही जौन गनीम मुख पर फौज तौन बलाइ कै ।
चलि कोस चारिक पहर एक तितै रह्यो ठहराइ कै ॥
जब भयो भोर अँदोर दहुँ दिशि चढ़यो ध्वान बजाइ कै ।
अति बेग तेग धनेस जमुना कूल पहुँचे आइ कै ॥
जब आनि पहुँच्यो जोर दल बल समय साधन सो सध्यो ॥ ८३०
अति धार भार खभार फनिपुर फनी सहसौ फन खध्यो ॥
रजधान सोँ असमान मुद्रित सेतु सिंधुन मेँ बँध्यो ।
जल प्रथम कीचनि बीच के थल पाछिले तरिबो नध्यो ॥

(८१२ पंक्ति में) "कित्तिसों कखाकरैं", पाठ था, हमने "कीर्ति सों करखा करैं", कर दिया है ।

(८२० पंक्ति में) "तहं", अधिक कर दिया है ।

एहि भाँति शाहनशाह जमुना उत्तरहिं ते उत्तरो।
पर ओर रोज बिहाँसु पूरब कोस द्वैक सिकंदरा॥
तेहि बीच सरिता निकट भो कुलि कटक को डेरा खरो।
सुनतहिं अवाई मौजदीं की फौज में खरभर परो॥
यह खबर सुनते मौजदीं मन में महा रिस सों भरो।
बक्कि उठ्यो यारहुँ देखना अब दौर जीवत हीं धरो॥
बाचें न कोऊ भागेहूँ गहि एक एकहिं संघरो॥ ८४०॥
इन्ह कियो ढाढ़स के ढिठाई सो सजाय इन्हें करो॥
कहि यों करेरे नैन करि करि कोप डेरनि तें कढ़्यो।
शमशेर सरकत खुनिस खरकत मोछ फरकत मन बढ़्यो॥
चतुरंग अंगी साज जंगी मत्तमैं गल मैं चढ़्यो।
धौंसा धकारनि धरनि धुनि धुवलोक धूरिन्ह सों मढ़्यो॥
हमराह वै भट पाँच लाख ऽभिलाख मम रन के भरे।
सब जिरहबख्तरपोस भक्खर बारहैं पर पक्खरे॥
एहि भाँति राति बस्यो बली चलि ओर दक्खिन आगरे।
फिरि भोर होतहिं दौरि करि डेरा करेइ सिकन्दरे॥
रनभूमि बीच रची सु अंतर कोस है दुहुँ फौज सों॥ ८५०॥
थित पूरबी पर ओर औ परवार पूरब ओज सों॥
दोउ बीर बाँके हराखि हाँके त्यों अमीरन सौज सों।
फर भोर शत्रु सँहारिये मजिये जमन की मौज सों॥
संवत सु सत्रह सै ओन्हत्तरि पूस पून्यो बुध तहीं। (१)
सन सो इग्यारह तैंतिसा माहे मोहर्रम चौदहीं॥ (२)
अरु पादशाही माह आज़ुर बायसी श्रीधर कही।
सफजंग की सायति सधी साहबजहां कीनो सही॥
तित भोर सों लगि पहर द्वै वन वारिधर बरखा कियो।
जब खुले बादर हरख सों दिल्लीधनी डंका दियो॥

---

(१) संवत् १७६९। (२) सन् ११३३

दल सजे बीर अमीर सैद बजीर त्यौँ हिय हरखियो ॥८६०॥
चतुरङ्ग जंग उमंग भर रनभूमि पिलि पहिले लियो ॥
कर बीर चढ़ि ठाढ़ो भयो हमराह सब स्वारी ठटी।
जिहिँ ओर जो दल चाहिये तिहिँ ओर त्यौँ फौजैँ बँटी ॥
लहि मिसिल सिगरे अगुहरे रजथान सौँ सरिता पटी।
अति सूर झंपत कुर्म्म कंपत शेष की बलता घटी ॥

हुलास छन्द ।

हुकुम शाहि को लै गल गज्ज्यो।
कुतुबुलमुलुक दाहिने सज्ज्यो ॥
बख्तरपोश बीर हमराही।
सैद सूर रनकाल सिपाही ॥

सैद सूर रनकाल सिपाही अति उतसाही ह्वै हमराही सकल सजे ८७०
जे शाहि हुकुम लहि तेगैँ गहि गाहि मारू मारू कहि कहि गरजे॥
बागैँ ढीली धरि घोरे दप करि मन में भरि सफ़जंग मजे ।
अबदुल्लह खान सैयद के धौँसे दक्खिन गहिरी बम्ब बजे ॥

दिलाजाक लोदी लोहाणी।
पन्नो तरीन सुरसर बाणी ॥
दाउद जई खेशगी गब्बी।
सु महम्मद बिट्टनी पब्बी ॥

बिट्टनी पब्बी मत्ती गब्बी अस्प अरब्बी पखरैते ।
बनि बख्तर झिलमैँ दायैँ दिल मैँ जैतरू तिल मैँ सखरैते ॥
पाठे पठनैहे लोह लपेटे कोहनि फैटे अखरैते ॥ ८८० ॥
यों अबदुल्लह खाँ सँग बीर महम्मद खाँ बंगश अगरैते ॥

(८६१ पंक्ति में) "भर" अधिक कर दिया है ।

स्वामित शरम शील जेहि माहीं ।
विप्र धेनु पालक छिति छाहीं ॥
देग तेग हूँ कायम जो है ।
पूरो भट सूरो रन सो है ॥
सो है भट पूरो जो रन सूरो बीर गरूरो गहि गाजा ।
अति उद्धत युद्धर क्रुद्ध धनुद्धर जंगी जग सोर जोर छाजा ॥
दै हरि दोही सरकि सिरोही दौरे दक्खिन ध्वा बाजा ।
यों अबदुल्लह खाँ को देवान रन मडवो रतनचंद राजा ॥
रहै बीरता को मद छाको ॥ ८९० ॥
तोफेवाज विरद है जाको ॥
देग तेगहूँ में अति अरबी ।
दौऱ्यो गहि शमशेर मगरबी ॥
शमशेर मगरबी गहि गहि गरबी अटल अरबी सो आयो ।
आँखैं रिस घूमैं तोफै झूमैं त्यौं दल दूमैं दै पायो ॥
तरवारैं नंगी फौजैं जंगी सैयद अंगी फरमायो ।
यों अबदुल्लह खाँ सँग बीर मुजफ्फर अली खाँ धायो ॥
बरकंदाज खान अनुखंगी ।
मुहसन खाँ अनवर खाँ जंगी ॥
सबल समुंदर खान सुयोधा ॥ ९०० ॥
यादगार बेगो अतिक्रोधा ॥
अति युद्धर क्रोधा सबल सुयोधा अरि अवरोधा निरभौरे ।
मंजूर मियाँ भट तैयब निक्कट ठाढ़े ठट्ट बार औरे ॥
सज्जे सन्नाहै जंग उमाहै जे रनसिंधु सहस पौरे ।
दुशमन भो दंग संग सय्यद सकल ओर दक्खिन दौरे ॥
दक्खिन फौज सकल गल गाजी ।
फिरि चौंचमू आगिली साजी ॥

बीर हुसेन अली खाँ बंका ।
बकसी चढ़्यो कोपि दै डंका ॥
सैयद रनबंका दै कर डंका दौऱ्यो लंका लगि शोर पऱ्यो ॥ ६१० ॥
दौरि हथनालैँ पक्खर ढालैँ कर भूपालैँ भूरि भऱ्यो ॥
छिति भार न धारत शेष सँभारत ह्वै अति आरत हहरि हऱ्यो ।
फौजैँ धाईँ चारिहुँ घाईँ प्रथम अवाई जाइ अऱ्यो ॥
त्योँ इनायतुल्ला खाँ चोपा ।
शुजा शुजा तुल्लह खाँ कोपा ॥
असद अली खाँ अस्प धयायो ।
पद सिपाह हमराही धायो ॥
धाये हमराही सकल सिपाही जंग उछाही सन्नाही ।
केते रनधीर अमीर बीर फर फाजिल फदकि तेग बाही ॥
बैरी सोँ बरकस सूरहुँ सरकस ह्वै ह्वै तरकस हैँ जाही ॥ ६२० ॥
तेँ बकसी संग दाँकि दौरे रननदी कोटि जिन्ह अवगाही ॥
गुरुन्नी तरीन तीराही ।
सरब मत नि ए बाँही ॥
नस्सुर गिलजी का सब काकर ।
आरब सूर निआजी नागर ॥
पेशगी रुभनार काशी आगर पणी उजागर रोशानी ।
महम्मद बिट्टनी जे फर मन्नी छत्री लोदी लोहानी ॥
बखत्यार रुहेले ईसफ खेले दिलाजाक औसर बानी ।
योँ दाउद जई जैनदी खाँ सँग बाकी फौजेँ फहरानी ॥
सजि गुलाब अली खाँ धायो ॥ ६३० ॥
जुलफिकार खाँ जेहि पद पायो ॥
चढ़्यो शप शिकिन खान सु गाजी ।
फतेअली खाँ तोपैँ साजी ॥

साजी बर तोपैं करि करि कांपैं फत्तह अलीखान बली ।
भारी हथनालैं बान महालैं जंगी भालै भाँति भली ॥
छकरे भरि गोले और अतोले भारनि डोलें जंग थली ।
यों बकसी सैद हुसेन अलीखाँ संग अगोही फौज चली ॥

तसु हिरोल भो मीरमुशर्रफ ।
फतह अली बुजरुक अरु अशरफ ॥
अली असगरखाँ सैफुल्लह ॥ ६४० ॥
अरु महमद हयाति रनदुल्लह ॥

सिगरे रनदुल्लह साजी मुल्लह कायम कल्लह गोपि गजे ।
फहराते कच्छी पायन्ह पच्छी तेग बरच्छिन्ह स्वच्छ सजे ॥
आँखैं रिसराती बैरिन्ह घाती जे उतपाती बीर सजे ।
फीलहुँ की स्वारी फौज डरारी आगे भारी ध्वान धजे ॥

उत्तर पिसर कि दाइदखाँ को ।
आजमखान बीर बल बाँको ॥
जल हल थल थल पुमिस पव्वत ।
सजी फौज अति दल भर दव्वत ॥

अति दलभर दव्वत पुहुमिस पव्वत गढ़ मढ़ सव्वत धकानि सकै ॥६५०॥
संकित दिगवारन करत करारन पारावार न जल छलकै ॥
करकित कच्छप घन भजत तजत बन फटत फनीफन सहस लच्यो ।
जब आजमखान ओर उत्तर फर मंडल मड़ि सफजंग रच्यो ॥

बीर गुलाब मीर युद्दीखाँ ।
सुलताँ कुल्ली खान फतह खाँ ॥
महमद अमाँ महम्मद बाकर ।
नेक कदम अतिही रन-आकर ॥

अतिही रन-आकर तेज प्रभाकर तेग कराकर करखैतै ।
बीरत को मूल शूल अरि को अबदुल रसूल सर बरखैतै ।

धीरन मेँ धरकस सावँत सरकस जंगो करकस परखैंतैं ॥ ९६० ॥
उत्तर तेँ दौरें साधि समोर बैरी औरे सरखैंतैं ॥

महाराज राजनि को राजा ।
सवल छबीलेराम गराजा ॥
चतुरंगी दल चपरि चलायो ।
कोपि ओर उत्तर तेँ धायो ॥

उत्तर तेँ धायो गरजत आयो बीर सुहायो बर जंगी ।
पखरैंते बाजी ताजे ताजी सावँत गाजी सफजंगी ॥
बखतर सन्नाही बीर उछाही दुशमनदाही अनुखंगी ।
फीलहुँ की स्वारी अति भयकारी फौजेँ भारी रनरंगी ॥

महाबीर जे एक तेँ एक गाढ़े ॥ ९७० ॥
सुमानी अनी के सबै संग ठाढ़े ॥
धनी संग सोहैँ सबै तेगधारी ।
सजे साज सोँ आपनी आसवारी ॥

नंद भगौतीदास को उत्तर तेँ रुधि आय ।
सावँत योधा प्रबल अति तिनको लए वुलाय ॥

दया बहादुर रिपु दल खण्डन ।
तासु नंद महिमण्डल मंडन ॥
गिरधरलाल बहादुर योधा ।
चढ़यो ओर उत्तर तेँ क्रोधा ॥

उत्तर तेँ क्रोधा जंगी योधा वसुधा सोधा एक सही ॥ ९८० ॥
जैतक जग निति जिति भूमण्डल कीन्ही कायम किति मही ॥

(९६६ पंक्ति में) "गरजगत" था, हमने "गरजत" कर दिया है।
(९७२ पंक्ति में) "धारि" है, "री" दीर्घ होनी चाहिए ।
(९७५ पंक्ति में) "तीनको" था, हमने "तिनको" कर दिया है।

जाटै जेहि कूद्यो सो घर लूट्यो जहँ तहँ यूध्यो तेग गही।
बाही रनबंका दीन्हों डंका लंका संका बाढ़ि रही॥

नृपति छबीलेराम को बेश।
राय गुलाब रावहु नरेश॥
मौजदीन को तृन गनि धायो।
दप करि ओर आपनी आयो॥

तित तुरंग धायो दप करि आयो बीर सुहायो चाइ भरो।
जित जंगी बान निशान लाल भूपाल छबीलेराम खरो॥
पहुँचो तिहि ओरे अत्रनि जोरे पाइ समोरन रंग धरो॥ ९९० ॥
राजा सों मिलि कै मुरुक्यो पिलि कै मौजदीन सो लपटि लरो॥

या विधि और ओर की सोजैं।
कहिहौं अब रिकाब की फौजैं॥
अटल अमीर बीरवर बाँके।
करनवाल एक कारन साके॥

करता रन साके जो बल बाँके बीरत छाके मौजभरे।
फहराती फौजैं साजी सौजैं जंगी मौजैं रंग धरे॥
ते बीर अमीर धीरधर युद्धर रन में कायम कीर्त्ति करैं।
बाँकनि दै दौरैं साधि समौरैं जाही ओरैं मीर परैं॥

बली खान दौरान बहादुर॥ १००० ॥
कीन्ही कायम कित्ति धुराधुर॥
रह्यो बिरद सम सामुद्दौला।
दल बल प्रबल बाहुबल तौला॥

समसामुद्दौला भुज बल तौला बीर अगोला फील चढ़े।
लरिबे की हाँही सकल सिपाही ते हमराही मोद मढ़े॥
बखतर दस्ताने कूडै ठाने बाँधे बाने तेज बढ़े।
कर कायम दस्त फतह रुस्तम सों जे रनरीति पढ़े॥

६

समसामुद्दौला को भांई ।
बीर मुजफ्फरखान सवाई ॥
जंग जुरे अतिही उतपाती ॥ १०१० ॥
अरबीलो दुशमन उर घाती ॥

दुशमन उर घाती अति उतपाती आखैँ राती रोस भरो ।
अरबीलो गब्बी अस्प अरब्बी तेग जुनब्बी हत्थ धरो ॥
द्वै तरकस बाँधे सायक साधे साधि उपाधे खेज करो ॥
गब्बर को गंजक भूपति भंजक तेजी रंजक खानि खरो ॥

सेख इनायति खान बीर हद ।
यली बली तसु वली महम्मद ॥
दोस्तअली खाँ साहिबखानो ।
करमंडल छाजे जेहि बानो ॥

छाजै जेहि बानो साहिबखानो जग मेँ जानो जोर छओ ॥१०२०॥
गब्बर मदभानै सर संधानै कोपि कमानै गहि गरजो ॥
सोभा को सागर बीर उजागर जानत जो सफजंग मझो ।
समसामुद्दौला संग अगोला दोस्तअली खाँ सँभरि सजो ॥

मुजफ्फर अली खान रन सज्ज्यो ।
अकबर अली खान गलगज्ज्यो ॥
खैरुद्दीँ खाँ अली सु युद्धर ।
सज्यो दिलावर खान दिलावर ॥

युद्धर शोभाधर दलप दिलावर ते दरवर सरदार सजे ।
मंजीठी वामर कलँगी चामर चौरासी गजगाह छजे ॥
बाँके बनैते हय पखरैते है अगरैते तेज रजे ॥ १०३० ॥
समसामुद्दौला सँग रंग मेँ जंगी योधा गाज गजे ॥

सज्यो जोर सादाति खान अति ।
बीर बली माजिँदरान पति ॥

पखरैते मोगल मदमस्ते ।
ताते तुरँग तेग रँगरत्ते ॥
ते हाँ रँगरत्ते हैं बर तत्ते रन मैं फत्ते जे चाहैं ।
हाथी मदमत्ते पक्खर घत्ते मद वरखत्ते परवाहैं ॥
आये सर मैं सजि कत्ते कर मैं फरकैं फरमैं जे बाहैं ।
ते बीर बली माजिंदरान पति संग जंग दुशमन दाहैं ॥
सु फरजंद सादाति खान को ॥ १०४० ॥
शहिजादो माजिंदरान को ॥
दल सज्यो फरजंद खान को ।
गंजक अरि भंजक गुमान को ॥
गाढ़े गढ़ गंजक बैरी भंजक मोरचा मंजक बंका है ।
रनमंडल पत्थ हत्थ गहि हत्थर अरिवर परभर शंका है ॥
अँगवै को लायक जाके सायक खरभरात डरि लंका है ।
जब वाज्यो गहरी वंबं बीर फरजंद खान को डंका है ॥
दूजो सुत सादाति खान को ।
अनुज बीर फरजंद खान को ॥
सबल सलावति खाँ भुव मंडन ॥ १०५० ॥
जुरत जंग दुशमन दल खंडन ॥
दुशमन दल खंडन माहिमा मंडन डंड अडंडन कोपि करै ।
लरिवे को चसको तालिब जस को बीरे रस को रंग धरै ॥
हमराही फौजैं बाँकी साजैं रन की मौजैं और भरै ।
माजिंदरान को शहिजादो फर सबल सलावति खाँ फहरै ॥
सुब सादाति खान को नंदन ।
सज्यो तीसरो शत्रुनिकंदन ॥
सैफ सैफखाँ की जग जाहिर ।
जासु जंगमहिमा महि माहिर ॥

महिमा महि माहिर जग में जाहिर जंग उछाहिर चित रहै ॥१०६०॥
रुस्तम सो बल मेँ दाकैँ दल मेँ जैतक पल मेँ फतह लहै ॥
जाकी फिरवानै आलम जानै साहि बखानै धन्य कहै ।
सुव सबल नंद सादाति खान को सैफखान जब सैफ गहै ॥

जेहि अमीर खां काबिल मंड्यो ।
कोपि थान इराके खंड्यो ॥
जाको आलमगीर बखानो ।
लसै जासु बीरन मेँ बानो ॥

बीरन मेँ बानो शाहि बखानो जग मेँ जानो जोर छजै ।
काबिल को सूबो बुद्धि अजूबो अति मनसूबो तेज रजै ॥
ताही को बेटो लोह लपेटो बीरत फेटो जंग गजै ॥ १०७० ॥
जेहि लह्यो खिताब बाप को ताहि अमीर खान के ध्वान बजै ॥

घोर जोर धौँसा धुनि सज्ज्यो ।
रन मुमताज खान गल गज्ज्यो ॥
हातिम करन कितिक जब रिझ्झत ।
रुस्तम सोँ जब अरि पर खिझ्झत ॥

जब अरि पर चढ़त सज्जि सुब दल बल भट ठट्ठनि ठाटि खग्ग गहै ।
को भूप बीर दूजो ऐसो कहि को तुम सो रन मंडि रहै ॥
सुनि बज्जत ध्वान ढुवन भज्जत पुर पुर को प्रबल प्रताप दहै ।
मुमताज खान बलवान वीर ऐसी बिधि श्रीधर सुकवि कहै ॥
रीझत जब नैकहुं मौलाखन की मंगन महि को सकल लहै ॥१०८०॥
बरनै कहँ लगि दीनन के दारिद हेमदत्त सो सकल दहै ॥
दरवाजे सदा दान को, धौँसा बाजतु गहिरी बंब रहै ।
मुमताज खान बलवान वीर ऐसी बिधि श्रीधर सुकवि कहै ॥

(१०७१ पंक्ति में) "किताब" था, हमने "खिताब" लिख दिया है ।

त्यों इमत्याज खान दल गंजक।
जुरत जंग दुशमन कुल भंजक॥
जस इमत्याज तेज इक ठाहर।
सज्यो फौज गरज्यो जिमि नाहर॥
गरज्यो जिमि नाहर वीर उछाहर रन रस माहर जोर भरो।
फौजनि को गाहक जस को चाहक दुर्जन दाहक तेज खरो॥
आयो करि कोपै गहि गहि धोपै रन को चोपै चित्त धरो॥ १०९०॥
इमत्याज खान बलवान सज्जि दल हठि कर मंडल माझ अरो॥
जित मुमताज खान दल सज्ज्यो।
हमराही लछ हलीम खाँ गज्ज्यो॥
जुरत जंग दुशमन दल दाही।
सबल बीर अफगान सिपाही॥
अफगान सिपाही रिपुदल दाही रन की हाही रोज नई।
शमले फहराते ताजी ताते रन की घातें जानि लई॥
बरनै कवि श्रीधर जेहि दिशि भर मुमताज खान की फौज भई।
ताही दिशि बाँको दिलाजाक सज्ज्यो लहीम खाँ बर गजई॥
सजि राजा गंधर्वसिंह दल॥ ११००॥
आयो शाहि रिकाब बीर बल॥
सिगरे कुरी साज साजि आए।
बानैते रजपूज सोहाए॥
रजपूत सोहाए साजे आए हाडा गौर सोमबंशी।
चौहान चँदेले बैस बघेले गहरवार औ रघुबंशी॥
कछवाह सुलंकी हैहयबंशी सिरनेते परिहारंशी।
गंधर्वसिंह राजा सज्ज्यो दल बुंदेलो सूरजबंशी॥
सज्यो गाजियुद्दीन खान दल।
त्यों रुस्तम दिल खान महाबल॥

दाउद खाँ हमराह सिधायो ॥ १११० ॥
बान दुपट्टे घाज सोहायो ॥
जेहि बान सोहाए रन के दाए बल सौं छाए अरिदाही ।
जे मन के बंगैं जंग अनेगैं भारी तेगैं हैं बाही ॥
खूंदैं मैदानैं पर के बानैं चित्त न आनैं सिप्पाही ।
ते सजे बीर दुद्धर युद्धर गाजुद्दीखाँ के हमराही ॥
सैफुल्लाह खान सजि आयो ।
जबरदस्त खाँ संग सोहायो ॥
कातिम बेग खान सुब सज्ज्यो ।
सुलताँ बेग खान गल गज्ज्यो ॥
बानैते सज्जे रन गलगज्जे धौंसे बज्जे भूमि हली ॥ ११२० ॥
कुल हत्ये पट्टे रन चौहट्टे खेले कट्टे मीड़ि थली ॥
अत्रनि के जोरैं पूरब ओरैं बैरिन की जिन फौज दली ।
ते सैफुल्लह खाँ संग रंग में हाँके बाँके बीर बली ॥
शहनशाह साहिब को मातुल ।
अटल बीरबल को बल ता तुल ॥
सजि दल खानिजाद खाँ आयो ।
शाइस्ता खाँ जेहि पद पायो ॥
पायो पद साँचो कीरति राँचो रनभू माँचो जोर भरो ।
जाकी अति बाँकी चमू चलाँकी बीरन में दाँकी देत खरो ॥
बैरिन के मत्थर कीजतु तत्थर हाँकत हत्थर हत्थ धरो ॥ ११३० ॥
यों शाइस्ता खाँ फर फतूह दाँ गहि कमान मैदान अरो ॥
शहनशाहि साहिब फरमायो ।
सजि अफरा सियाब खाँ आयो ॥
डील पील बल को जेहि दायो ।
महाबीर अगहर ह्वै धायो ॥

अगहर ह्वै धायो शाह फरमायो वल को दायो जाहि लसै।
अंगूठनि मसकै धरनी धसकै कूरम कसकै सेस ससै ॥
गाहि कै दुहु हत्थे गै वर सत्थे मत्थनि मत्थे मीडि मसै।
साहब समत्थ अफरासियाव खाँ यों रनमंडल धूम धसै ॥

अफजल खाँ सर्दार सदर सजि ॥ ११४० ॥
आयो हाफ़िज़ इलम ओज रजि ॥
रनमंडल मडक जस गाहक।
बाहक तेग शत्रु दल दाहक ॥

शत्रुन को दाहक पत्र निवाहक जस को गाहक ओज रजो।
रन मंडल मंडन बैरि विहंडन लै भुज दंडन जैत मजो ॥
मुसहफ को जेहि वर कत्तो केवर कर कमान जेहि साज सजो।
यों अफ़ज़ल खां सदर सदूर आफिज फर नाहर ज्यों गरजो ॥

बीर सैद अनवर खाँ सो है।
देग तेग कायम जग जो है ॥
कर कमान जाकी जुलहाली ॥ ११५० ॥
जुरत जंग रन परत न खाली ॥

रन परत न खाली तेग कराली जग जुलहाली कौन सहै।
रस रूप मनौजें भूपर भौजें दिल दिल सौजें शाहि कहै ॥
विद्या गुन आकर कित्ति सुधाकर तेज प्रभाकर दुवन दहै।
सज्जित सन्नाह उतसाह चित्त सैयद अनवर खाँ खग्ग गहै ॥

महमद अली वंश उतसाही
जबर सैद सावंत सिपाही ॥
फौजें सत गनीम की गाही।
बार हजार तेग जिन बाही ॥

तेगें जिन बाही फौजें गाही सबल सिपाही रन दायो ॥ ११६० ॥
रोसे दग राते ताजी ताते फरफरात मन भायो ॥

कते कंवर में भाले कर में बखतर गर में रिस छायो ।
हमराह सैद अनवर खाँ सोई जबर हु जबरखान आयो ॥
त्यों दरबार खान दल साजा ।
जबै ध्वान श्रीधर बर बाजा ॥
फर ठाहर नाहर जिमि गाजे ।
सुनत घोर गब्बर गन लाजे ॥
गब्बर गन लाजे नाहर गाजे धौंसे बाजे घहरि घनै ।
पखरैते तुरकी लेते फुरकी टापैं खुर की छार छनै ॥
सोहैं भट बाँके हय चढ़ि हाँके लोह ढांके बीर बने ॥ ११७० ॥
दरबार खान नर जंग सु भुजवर आयो खग धर रोस मने ॥
इफ्तखार खाँ जंगी योधा ।
मुखलिस खान महाबल क्रोधा ॥
सज इलायची बेग सँधाने ।
बहादुर दिल खाँ जग माने ॥
मानै जग बाँको करता साको आगे दाँको दल दूमैं ।
भालै की नोकै सुरगति रोकै सरकी फोंके छबि भूमैं ॥
सन्नाहो साजे गरब गराजै हय चढ़ि गाजै रनभूमैं ।
यों बहादुर दिल खाँन भुजबल अरि को दल तीरो तूमैं ॥
जे पुस्तैन अमीर हजूरी ॥ ११८० ॥
तेग तेगहूँ कीरति पूरी ॥
बली अरसला खाँ गुन गरबी ।
दौर्‍यो गहि शमशेर मगरबी ॥
शमशेर मगरबी गहि गुन गरबी चढ़ि हय अरबी सो धायो ।
पखरैते बाजी तुरकी ताजी साजे गाजी सो भायो ॥
सोहै गर बखतर कूडैं सिर पर कत्ते कंवर रन दायो ।
यों मीर अरसला खाँ अमीर रन धीर मीर फरमैं आयो ॥

रन रसीद खाँ फतहुल्लह खाँ।
सरस तकरुब खाँ बैरम खाँ॥
सजि जाँबाज खान रन धायो ॥११९०॥
वीर फकीरुल्लह खाँ आयो॥
आयो रनबाँको करता साको एक कहाँ को भू फर मैं।
टोपैं सिर ऊपर तरकस कंवर भाले कर बखतर गर मैं॥
धौंसे घहराने धुज फहराने शोभत बाने दू दर मैं।
बैरी दल भानै मानि निशानैं तानि कमानैं स्यौं सर मैं॥
सैद मुरुतुजा खान सुयोधा।
वीर वारहैं बाल सु क्रोधा॥
जिहिँ चहुँ ओर शत्रुदल रोधा।
एक वीर बसुधापति सोधा॥
बसुधापति सोधा जंगी योधा सैयद क्रोधा ज्यों मन मैं॥१२००॥
धाए हमराही सकल सिपाही तेगैं बाहीं बैरन मैं॥
ज्यों सिंह गराजे यों गल गाजे अरि करि लाजै ज्यों बन मैं।
अँगवै को लायक जिनके सायक को ठहराइ सकै रन मैं॥
टीकाराम चारु रुच नाढ़ी।
वीर बहेलिया कीरति बाढ़ी॥
चढ़ी फ़ौज मनु घटा असाढ़ी।
फतह जासु आगे नित ठाढ़ी॥
जनु घटा असाढ़ी फौजैं बाढ़ी फतह सु ठाढ़ी पुर गाजैं।
बंदूखैं भारी सहज डरारी सकल सवारी सोँ छाजै॥
आरब्बी घोरे सुलगे तोरे मुहड़ी में जोरे जै काजे॥ १२१०॥
यों टीकाराम कामतरु रन मैं शहनशाहि आगे राजे॥
मियां निहाल वली फतेह दाँ।
लह्यो खिताब सु यातमाद खाँ॥

मौजदीन के संगहि आयो ।
महावीर अगहर ह्वै धायो ॥

अगहर ह्वै धायो तुरग धयायो दप करि आयो रंग भरो ।
अज्जीमुश्शानी अति अभिमानी पादशाह के पाँय परो ॥
साहब सुख मानो अपनो जानो दै करि पानो हाथ धरो ।
तित शाहि हुकुम लै मुरक्यो पिलि कै जहाँदार सो जाइ अरो ॥

हीर छन्द ।

तब मौजदीँ मन रोस कै, चहुँ ओर बाँकी फौज कै ॥१२२०॥
हिरउल सु कोकिलताशखाँ, बलबंक बीर फतेह दाँ ॥
नौशेरी खाँ तसु नंद है, रन के सिखे फरफंद है ॥
आजम्म खाँ तसु बीर है, सफ जंग जोर अमीर है ॥
सुब सैद राजे खाँ जहीँ, अबदुस्समुद्दली खाँ तहीँ ॥
तहँ सैद अबुलगफार है, सफजंग जोर जुझार है ॥
जित अब्बदुल्लह खान है, तेहि सामुहेँ सब ज्वान है ॥
द्वै लख सवारन साजि के, आए वली गल गाजि के ॥
हुसेनली खाँ जेहि दिशा, तित सज्यो जुलफिकार खाँ ॥
द्वै लख सवार सनाह सोँ, पखरैत फील उछाह सोँ ॥
फिरि जबर जानी खाँ चढ़्यो, रनरंग रोस महा मढ़्यो ॥१२३०॥
जै जोरजाँ निस्सार खाँ, सादिक सु बुतफुल्लाह खाँ ॥
तहँ दिल दिलेरो खाँ बली, मुखत्यार खाँ जस की थली ॥
सब बीर आए साजि के, चतुरंग दल गल गाजि के ॥
आजम्म खाँ बकसी जहीँ, सब सामुहेँ आए तहीँ ॥
राजा छबीलेराम जू, रनरंग धर जसधाम जू ॥
नव्वाब आजम खाँ जहाँ, हमराह भो राजा तहाँ ॥
महमद अमी खाँ वीर है, कमरुदीँ खाँ रनधीर है ॥

अबदुस्समुद खाँ दौर है, तहँ जकरिया खाँ जोर है ॥
सुत गाजियुद्दीँ खान को, चिकलीच खाँ बलवान को ॥
फिरि रहमरहमाँ खान जू, साजि चढ़े गहि किरवान जू ॥१२४०॥
सब मीरजुमिला संग है, द्वै लख सवार उमंग है ॥
यह बंक कोतल फौज है, सावंत उर में ओज है ॥
द्वै लाख स्वारन सौँ सजे, उप रोस ध्वान घने बजे ॥
जित परत भारी भीर है, तित लरत जोर अमीर है ॥
इहि भाँति कर फौजेँ बटीँ, खुर घाट दल बल छिति छटीँ ॥
तहँ मीरजुमिला ओज सोँ, द्वै लाख कोतल फौज सोँ ॥
बानतै बाँके बीर सो, तूरान बार अमीर सो ॥
ओहि ओर कीनी बंचकै, इनके करे परपंच कै ॥

हरिगीता छंद ।

दुहुँ ओर फौजैँ साजि योँ गल गाजि भट ठाढ़े भए ।
बाजे नगारे फीलवारे घम्म धुनि धुव कंपए ॥ १२५०॥
खुर थार भार दुधार सोँ छटि छार सूरज झंपए ।
तह वहलकी झुकि मेरु हहलत पहलसम भुव बंपए ॥
दुहुँ ओर फौजनि ओज सोँ रन मौज देखा देख भो ।
हथनाल तोपैँ बान जाल विशाल गरज अलेख भो ॥
घोरनाल घोर अँदोर दुहुँ दल रहकलास विशेष भो ।
फर बजी बहकि बँदूख अगनित तित बनैतनि तेख भो ॥
कड़ कड़ाकड़ सो अरावे छुटत टपकनि टाप की ।
चहुँ ओर घोर घटा मढ़ी धुवधार तोपतराव की ॥
वर बान बगरत बीजुरी सन गोल ओला थाप की ।
नहिँ पहर एक पिछानि काहू रही पर की आप की ॥ १२६० ॥
छुटि गयो सो धुँधकार त्योँ भिनुसार सोँ दुहुं दिसि भयो ।

ढळकार वरि अमीर सावँत चाँप सर कर वर लयो ॥
इप करत आगें बाजि वागे॑ मौज मोद मने भयो ।
बज उठे मारू मारु मारु अँदोर रनमंडल छयो ॥
तहँ तीर तर तर बान सर सर सुभट भर गोला चले ।
पग पिलत आगंहिं आगहीं सावंत भूप भले भले ॥
भट लाल मुख सुख भरे पीरे रंग कायर हलहले ।
जिमि देखि जाचक दानि सुख मुख सूम दुख मुख बेकले ॥
इत उत दुहूं दल के जिजैं जे बीर बीर बिरी बिरे ।
ते करन साके बलिक बाँके हाँकि भट भट सों भिरे ॥१२७७॥
शमशेर सराक्ति सिरोह वार संभार सावँत सिर चिरे ।
दीनी झमाझम झमाकि झर झर झूमि झूमि किते गिरे ॥
तहँ दौरि अगवर ह्वै सिधायो धनी मुशरफ़ मीर है ।
तिन मीर बुजरुक मीर अशरफ़ तासु बीर सुबीर है ॥
तब जुलफिकार गह्यो महाबल जुलफिकार अमीर है ।
झमकी दुधारनि सार सार दुधार धीरैं धीर है ॥
तहँ अली असगर खाँ महाबल मदति पहुँचो जाइकै ।
फिर जैनदीं खाँ बीर पहुँचो तेग अंग अँगाइकै ॥
फत्तह अलीखाँ सफ शिकिनखाँ भये शामिल आइकै ।
पहुँचो हुसेन अलीयखाँ धौंसे हिरौल बजाइकै ॥ १२८० ॥
सरदार तितहिँ हुसेनली खाँ लै अमीरन संग है ।
रन भिरयो जुल्लफिकार खाँ हमराह गाढ़े अंग है ॥
फर मैं फकाफक होत तेग कटार कटकतु फंग है ।
तहँ तीर तरकस सबै खाली भए लाख निखंग है ॥
सावँत सैदहुसेनली खाँ जोर जैतक सत्थ ह्वै ।
तहँ हत्थ हत्थनि मत्थ मत्थनि लरति लत्थनि पत्थ ह्वै ॥
गहि जबर हत्थर करे तत्थर परे विरथ वितत्थ ह्वै ।
उहि सत्थ बार समत्थ हे एक मत्थगे बिनमत्थ ह्वै ॥

तब सैद अशरफ अगहरो भाई मुशर्रफ मीर को।
समसार तासु अँगावतो अँग अंग ह्वो रन धीर को॥ १२६०॥
हेरो सुहूरनि हाथ प्यालो हरखियो हिय बीर को।
खीनी शहादति साहिबी सुरलोक बुद्धि गँभीर को॥
पेल्यो मुशर्रफ मीर पीलनि पील वान जुझाइकै।
तब अली असगरखाँ पिल्यो फर धार अंग अँगाइकै॥
सुब जैनदी ँ खाँ गहि जुनब्बी कर कमान चढ़ाइकै।
फत्तह अलीखाँ शफशिकिनखाँ भए अगहर आइकै॥
इन सबनि जाइ अँगाइ घायनि लखि लगाई जूझियो।
गिरबान गहि गहि जात रहि रहि एक एक अरूझियो॥
फैली फुलंगैँ सार सारनि बजत परत न सूझियो।
फत्तहअलीखाँ शफशिकिनखाँ जैनदीखाँ जूझियो॥ १३००॥
उत जुलुफिकारहि खान कैं सँग के अमीर किते गिरे।
ठहराइ सकत न पाइ लखि दल आपु आइ किए थिरे॥
हुस्सेनलीखाँ भो उतारू पिले जंगी मुँडचिरे।
उत भो उतारू जुलफिकार दुधार दोऊ भट भिरे॥
दोऊ अमीरख उम्मराव भिरे दोऊ तेहा भरे।
हातिम दोऊ रुस्तम दोऊ कायम दोऊ रन कर करे॥
शमशेर सरकि सिरोह की सावंत ये दोऊ लरे।
घन घाइ खाइ अँगाइ अंगनि अटल ह्वै दोऊ अरे॥
मुखत्यारखाँ जाँबाजखाँ जाँनिसारखाँ आटोप कै।
सादिक सु लुतफुल्लाहखाँ आयो महाबल चोप कै॥ १३१०॥
फिर दिल दिलेर अलीयखाँ उमराव केतक कोप कै।
जिहिँ ओर आजमखाँ तहाँ फर लियो फौजनि छोप कै॥
तब मारु मारु संघारु हाँ हाँ हाँ दुहूँ दल ह्वै रह्यो।
राजा छबिलेराम आजमखाँ वली कर वर गह्यो॥

सुलताँ कुलीखाँ सैद शेखर सूखियतखाँ रिस भर्यो।
फिर नेक कदम फतेह कर श्रीधर सुकवि जग जस लह्यो॥
तहँ पिले बसतर-पोश रोसभरे महा धमकी मही।
गिरवान गहि गहि जात रहि रहि हहँ हाँहँरि ह्वै रही॥
को गनै तरफन तीर की बर बान बरखन झर सही।
तरवारि ते तहँ वार त्यों अँगवत चलावत हरखही ॥१३२०॥
तहँ कँपत कायर गात कदली पात बात मनों लगे।
जे सूमदान न देत हे, जिय देत भागे ठग ठगे॥
जे दान निरखे दान में जिय दान हूँ मैं जगमगे ।
मुख लाल रंग प्रसन्नता हिँगु लाल रंग मनो रँगे॥
राजा छबीलेराम को जंगी महावत जूझियो ।
मैं मंत मुख रुख फिरत लखि वर वीर मन महँ बूझियो॥
तब आपु दै कल दै अँगूठा जोर करत असूझियो।
रनथंभ पीलहि थाँभि पेलि लगाइ राखी लूझियो॥
राजा छबीलेराम जू को खेश सजि फौजैं भली ।
रन मड़्यो रैया राय राव गुलाबराव मही हली ॥ १३३० ॥
मुखत्यार खाँ बलवान की चतुरंग पृतना दलमली।
मुखत्यार खान समेति हाथी साथ जूझ्यो तेहि थली॥
तब राज श्रीगिरधर बहादुर सुत्र बहादुर औ फबै।
फब कील हूलि हला कियो दौरे महादल के सबै॥
दप कियो रैयाराय राव गुलाब राव जहाँ जबै।
सरदार सिगरे हाँक दै दौरे दिलेर तहाँ तबै॥
भगवन्त राय दिवान कायथ वीर बर काकोरिया।
तसु नंद राय सुबंस गहि किरवान दर वर दौरिया॥
दप कियो बेनीराम नागर नौनिहाल अगोरिया।
फिरि शुजा सैद इमाम सेख सुपीर महमद पौरिया ॥ १३४० ॥
नर सूर सर बानी बली अफ़गाँ वतन चिहि टौलिया।

किरवान अहमद खाँ गही वा फौज फर बागै लिया ॥
फिरि सैद सुब शाकिर महम्मद मीर जिहिं रन लै लिया ।
जसु वतन ओलमगोट रो सफ़जंग में जस फैलिया ॥
दौर्‌यो गुलाव मोहैयुदीखाँ बीर आजम खान को ।
दौर्‌यो वली सुलताँ कुली खाँ जिनै जस किरवान को ॥
रन मड्यो शेख रसूखियत खाँ जाहि सम वलवान को ।
हरि कदम फत्तह नेककदम जु देग तेगहु बान को ॥
नव्वाव आजम खाँ तहाँ फर भूमि हाँकि हला कियो ।
सुलताँ कुली खाँ बाग बीर रसूखियत खाँ हूलियो ॥१३५०॥
भनि सुकवि श्रीधर नेक कदम सु फौज गुर गाढ़ो हियो ।
तहँ जवर जानीखान पर झर झरनि कै बर बरखियो ॥
नव्वाब आजम खाँ महाबल जवरजानीखाँ भिरो ।
रह सत्थ आजम खाँ बली अँग अंग घन घायनि घिरो ॥
शमशेर सर सर तीर तर तर मुख न काहू को फिरा ।
तहँ हसित साथी सरथ हाथी जूझि जानीखाँ गिरो ॥
इतके भए सरदार साथी सहित सेर सुघाइ कै ।
उतके किते जूझे अरूझे रहे लोह अघाइ कै ॥
नहिँ लरत चलत न बर परे दोऊ अरे अरराइ कैं ।
वे लाख, ये न हजार पूरे रहि रहे ठहराइ कै ॥ १३६० ॥
तब सैद कुतुबुलमुलुक बीर अमीर मनि रेला कियो ।
बंगश महम्मद खान शादी खान कर करबर लियो ॥
रन काज राजा रतनचंद महावली हिय हरखियो ।
जैकृष्णदास दिवान निजमुद्दीँ अलीखाँ को बियो ॥
पुनि सैद अनवर खाँ समुद्दर खाँ सँभारी तेग है ।
मंजूर तैयब तरब अरबनि यादगारो बेग है ॥
सरदार बारहे॑ बार रुस्तमदस्त सैद अनेग है ।
ये सैद अबदुल्लाह खाँन रिकाब तेग फते गहै ॥

इत कियो हाँकि हलाक दूनौ आनि उन आगो लियो।
बलवान कोकिलताशखाँ तसु बीर आजमखाँ कियो॥ १३७०॥
फिरि सैद राजे खान अबदुल समुदलीखाँ हरखियो।
नौशेरखान जुझार अबुलगफार हाँक तहाँ दियो॥
कल लेन देत न रहकले हथनाल घन घुरनाल है।
तूफान कहर तुफंग की फहरान बान बिशाल है॥
तहँ तीर सलभ-समूह-सम सुरलोक तर सरजाल है।
असमान भानु बिमान गो रुकि भयो धुंधूकाल है॥
तब बीर बीर बिरीँ बिरे मनु गहबरे भट भट भिरे।
बाजि उठो मारू मारु मारु पुकार करि करि मुरु भिरे॥
बानैत गब्बी है अरब्बी बीर गव्वी कर थिरे।
तहँ होत हूह फकाफकी फर मुख न काहू के फिरे॥ १३८०॥
तब गह्यो कुतुबुलमुलुक के बर उतरि कोकिलताशखाँ।
बंगश महम्मदखाँ इतै उत बीर आजमखान खाँ॥
इत सूर सादीखान उत नौशेरीखाँ उनकीकखाँ।
भट भिरे एकहिं एक जे बबिरी बिरे दूहूँ पखा॥
उत सैद राजेखान अबदुस्समुदअली बागैँ लियो।
इहिँ ओर राजा रतनचंद गयंद चढ़ि रेला कियो॥
सरदार इत उत के भिरे रन लत्थ पत्थनि के बियो।
तरवारि तीर तुफंग साँगि कटार कै बर बरखियो॥
जयकृष्णदास दिवान निजमुद्दी अलीखाँ को बढ़ो।
तब सैद अनवरखाँ समुंदर खान अगहर ह्वै कढ़ो॥ १३९०॥
मंजूर तैयबतरब साहबराय रोस महा मढ़ो।
लखि पिलनि कुतबुलमुलुक की सब पिलत रनरस रुचि चढ़ो॥
चहुँ ओर फौजनि फौज सो मन मौज मारु महा परी।
हाथियार भार दुधार भर मनु मघा मेघन की झरी॥

झिरि झिलम कुंडि कुरी कुरी किरि गई बखतर की करी।
करि मारु मारु सँभारु यार सँभारु सुनियत ललकरी ॥
घन घटा घोर घमंड सो सम घुमड़ि फर फौजें रही।
धौंसे धोकारत गाज गहि तरवारि चमक छटा सही ॥
झर तीर गोलिन वार गोला परत ओला से तही ।
महि मची मेदनि गूद कीच कृपान सैयद जब गही ॥ १४०० ॥
मदभरे भ्रमत खरे अघाइ अघाइ करिवर थरि अरै।
सिर सरत श्रोनितधार मनहुँ पहार सोँ झरना झरै ॥
बढ़ि चली लोहुन की नदी लहरैं लखैं कहि को तरै।
तेहि तीर दलदल मास को वल ठान काहू को परै ॥

कवित्त।

फौजबल भुजबल मन मनसूबा बल,
श्रीधर हरीफन हरषि हहलावतो।
साहेब सरबुलंदखाँ नवाब करि करि,
पत्थ के से हत्थ महाभारथ मचावतो ॥
जहाँ शाहमौजदीं रफीउलकदर कूटि,
जेबर जुलफिकार खाँनै बाँधि ल्यावतो ॥ १४१० ॥
होतो हमराह लाहानूर के समर तो,
अजीम सोँ अजीम पातशाही कौन पावतो ॥

सनमुख साहजू के साजि सेन चारों अंग,
सैद अबदुल्लह खाँ वीर आयो वल में ।
बाजि उठ्यो मारू मारु मारु भो अँदोर जोर,
हाँके फील बाँके पेलि पैठे रेलि पल में ॥
श्रीधर भनत दोसतलीखाँ अँगाइ धाइ,
मुन कै चलाए भट वैसे चलाचल में ।
८

वाह वाह कहैं पातशाह औ सिपाह सबै,
वाह वाह रह्यो है सवत्त दुहूँ दल में ॥ १४२० ॥

छप्पय ।

श्रीधर दलबल प्रबल लखि लोकपाल रह लज्जि ।
महमद सालेह बीर जू चढ़त कटक बर सज्जि ॥
सज्जदल रन कज्ज जनप्पसमज्जज्जयबर ।
वंगग्गहनि मतंगग्गनानि उतुंगग्गिरिवर ॥
रंगग्गति सुकुरंगाग्गवन तुरंगग्गति गुर ।
पच्छड्डर थिर कच्छ कर ब सुलच्छभ्भर पुर ॥
लच्छ भट्ट टट्टिय चढ़्यो महमद सालेह ज्वान ।
धुजा बान झलकैं बजैं उद्धद्धुनि धुर ध्वान ॥
उद्धद्धुनि धुर ध्वान द्धुकि सज युद्धज्जै भर ।
लक्ख भ्भट रण दक्ख क्खुमसुबियक्ख क्कै कर ॥ १४३० ॥
बारब्बलिय उछारभ्भरि क्खग बाहब्बल किय ।
बान ब्बिकट कमान कठिन कृपान द्दुर लिय ॥
कर लिय खग कोप्यो बली, महमद साल ज्वान ।
अरि के बढ़ गढ़ मढ़नि पर, कियेउ सुकोपि पयान ॥
कोपप्पकरि पयानप्पथि घन ध्वान छलकत ।
लच्छ च्छहरि बरच्छ च्छविवर स्वच्छ च्छलकत ॥
युद्ध ज्जुरत सकुद्ध भ्भट रण उद्ध द्धमकिय ।
वाहक बलिय उछाह भ्भरि खग बाहब्बल किय ॥
खग्ग वाह बलकिय बली महमद सालेह वीर ।
दुवन ठट्ठ कट्टिय भखो श्रोनन्नद भरि नीर ॥ १४४० ॥
श्रोनन्नद भरि नीर भ्भरित गँभीर भ्भलकत ।
लुत्थत्थिरन उलत्थज्जलजिय जुत्थत्थलकत ॥

बीच चलननगी चच्चल इर कीचच्चभकत ।
मुंड भरि करि कुम्भ भरत सुअम्भ भभकत ॥
महमद सालेह बीर कोपि भारी रन मंडेउ ।
अरि की प्रतन प्रचंड खंड खंडन करि खंडेउ ॥
गीध गूद बेताल मास हर मुंडमाल लिय ।
रुहिरय रुहिर अपार पाइ भैरव गलगज्जिय ॥
ताकि शत्रु सूर को ग्रास कर श्रोनसिंधु गज्जन कियो ।
लखि परब कृपानी रावरी मनहुँ दान उत्तम दियो ॥ १४५० ॥

कवित्त।

फौजनि की घटा की घमंड घोर घेरु करि,
    मौजदीन मघवा के मन में उछाह भो ।
तोप गरजत तरवारि बीजु तरजत,
    बरषत बाननि अचल चाल्यो राह भो ॥
तब गिरिवर कर धरि गिरिवरधर,
    श्रीधर भनत व्रजमंडल की छाँह भो ।
अब गिरिधर लाल बहादुर बीर,
    समसेर गहि कर पातसाही को पनाह भो ॥
मार्यो जोर जंग रंग आजम अजीम जू सौं,
    गालिब गनीम आयो महमद गरूर है ॥ १४६० ॥
श्रीधर सरबुलंद खाँ नवाब दौर कै,
    हिरौलही हटायो कीनों चमू चकाचूर है ॥
मारि खानि खालि में बिदारि राउ दलपति,
    गंजेउ जुलफिकार खान को गरूर है ।
वाह वाह करे पातशाह औ सिपाह रही,
    सही समसेर तेरी शाहि के हजूर है ॥

जहाँदार शाह शमशेर जोरे जेर करि,
जहाँ शाहि रफीसान की ही कौन सी तथा।
आजम के संगन से जंग महरायो त्यों,
जुलुफिकार खाँ को फेर लावतो वहै पथा ॥ १४७० ॥

श्रीधर सरबुलंद खान किरवान धनी,
रुस्तम के काम कै बढ़ावतो बड़ी कथा।
बार बार कहे पातशाह अपसोस करि,
हाय हमराह यो अजीम शाह के न था ॥

श्रीधर फरुकसाहि मौजदीं भिरे हैं दोऊ,
पूरो नेक कदम कों करम अलाह को।
कीनो खग बाह मोगलनि के दलनि भो,
हिरोल की पनाह जाके कोप की पनाह को ॥

गालिब गनीम गाज गंज मगरूरनि को,
गरब को दलिक गजब गुमराह को ॥ १४८० ॥

देखै पातशाह उत शाह पायो निज दले,
वाह वाह करत सिपाह पातशाह को ॥
भारी पातशाह दोऊ आगरे अगारी लरैं,
धौंसन की दुहूँ ओर श्रीधर धुकार है।

बाजे बीर बीर गोला बान तरवारि तीर,
बाजे सार सार होत सोर मार मार हैं ॥
शेख खैरुल्लाह अलेख रन कीनो कैई दिनो,
जुगनि के भूखे मसहारिन अहार है।

घाय खाए बेसुमार पैठि दल अरिकै सु,
मार तें गिराए बीर बाँके बेसुमार है ॥ १४९० ॥

बखतरपोस पखरैत फील स्वारन की,
कारी घटा भारी ज्यों पयोद प्रलै काल को।

श्रीधर भनत गोला बान सर झर भर,
घरखत थाँभै को करैरी तरवाल को ॥
दिलाजाक डपटि हलीम खाँ वरग जाइ,
दल मींडि मार्‍यो मौजदीन विकराल को ।
श्रोनित सलित तरङ्गनाँचै प्रेत पहपट,
घट घट घूँटे कर खप्पर कपाल को ॥
इत गल गाजि चढ्यो फरुकसियर शाहि,
उत मौजदीन करि भारी भट भरती ॥
तोप की डकारनि सोँ बीर हहकारनि सोँ,
धौंसा की धोकारनि धमाकि उठी धरती ॥
श्रीधर नवाव फरजंद खाँ सु जंग जुरे,
जोगिनी अघायो जुगजुगनि की बरती ।
हहर्‍यो हिरौल भीर गोल पै परी ही तूँ न,
करतो हिरौली तौ हिरौलै भीर परती ॥
मार्‍यो मौजदीनै फर बिफारि पलक बीच,
कीनो मौजदीन को कटकु अड़ अड़ है ।
मींडि गढ़ आजम अजीम अजमति गढ़,
कूद्यो जटवारे के सकल मढ़ी मढ़ है ॥
श्रीधर भनत महाराज श्रीछबीलेराम,
तेरे बैरी बाँची काहू सूर की न सढ़ है ।
जीत्यो च्यारो ओर मेरी फिकिर सो कीजे जोर,
ऐसे महाराजा सोँ गहति गाढ़ो गढ़ है ॥
फिर मण्ड्यो श्रीधर छबीलेराम राजा,
पातशाह कोँ हिरौल पातशाहत को पाहरू ॥
तोप की तरापैँ तोरि गोला को गुलेल गनि,
पेलि दल गार्‍यो मौजदीनै गहि गाहरू ॥

चके हरि हर ब्रंभ देषि आतपत्त थभं,
जैत रनखंभ वीर विक्रम उछाहरू ॥ १५२० ॥

सुरुखरू आप भयो आबरू दिलीस पायो,
माहरू रफ़ीक़ भो मुखालिफ़ सियाहरू ॥

भालनि सोँ भाला भिर्‍यो बरछा सौँ बरछानि,
सरे समसेर समसेरनि सुखंग मैँ ।
तीरन को कीनो तन तीरनि तुनीरा तोरू,
तोरादार जोरन न पावतु सुफंग मैँ ॥
जंग सुलतानी मैँ कहानी कैसो कीनो काम,
श्रीधर छबीलेराम राजा रनरंग मैँ ।
साढ़ेतीनि हाथ कद दसहथा हाथी चढ्यो,
दोई हाथ होत हैँ हजार हाथ जंग मैँ ॥ १५३० ॥

श्रीधर अवाई देषि फरुकसियर जू की,
आयो मत्त मौजदीँ अनेक अभिलाख कै ।
घरिकु घमंड घोर माच्यो गइ मुरि बागैँ,
अड़ियो छबीलेराम राजा मन माख कै ॥
मारि पर दल हरखायो जूथ जोगिनी को,
करत बडाई सिवासंकरहि साख कै ॥
एकै बीर कैयो लाखैँ एक के न आन्यो मन,
एक ही गनत कैयो लाख कैयो लाख कै ॥
माच्यो जोर जंग दुहूँ ओर पातशाहनि सोँ,
उत तेँ उमड़ि दल मौजदीँ को धायो है ॥ १५४० ॥

आजमखाँ जू के संग शाह की नजरि आगैँ,
सैद सुलतान जहाँ जग तेँ जगायो है ।
श्रीधर सुकबि तीर तरल तुफंग सोँ,
सितारा देखो चुनि सरदारनि गिरायो है ।

खाली कीनो पल में अमारी हौदा हाथिन को,
धोखो होत यामैं स्वार आयो कै न आयो है ॥
फरुकसियर शाहि जहाँदार शाहि दोऊ,
आगरे अगारी अरे पातसाही हेत मैं ।
श्रीधर बजत मारू बाजे बाजे बीरन के,
मुरि गई बागैं रहे केतक न चेत मैं ॥ १५५० ॥
अंगद सो अड़ो पातशाहति पलटि डार्यो,
एवी एतो आजमखाँ सवल बनैत मैं ।
महा हुव भारथ को कमनेती पारथ की,
जैसो भीम भुज बल भाख्यो कुरुखेत मैं ॥
श्रीधर कृपान गहि मुसलेह खान रन,
कीनो घमसान यों मसान हहरात है ॥
झुंडनि झंडूले प्रेत लोहू के प्रवाह परे,
लाती लैरैं पैरैं पेलि पियत अन्हात हैं ।
खोपरा लौं खोपरिन फोरैं गलकत गदू,
पोरीलों पलासी खाल खैँचि खैँचि खात है ॥ १५६० ॥
पाखर से खापरानि चहुवा चुरैलनि के,
चाइ भरे चर चर चपरि चबात हैं ॥

छप्पय ।

भट्ट ठट्ट डट भट्ट भट्ट हरि आभट्ट हरि ।
उद्धत जुद्धत कुद्ध सुद्ध गज्जत जिमि केहरि ॥
बीर मुसल्लेह खाँ जलद उल्लद दल सज्जिय ।
पख्खर पख्खर लख्ख स्याह सन्नाह समज्जिय ॥
बल तडित तेग तरपत कड़ाकि रस वर श्रीधर धर कुरेउ ।
तहं गोलापत्थर वित्थरिय सो अरि मत्थर थत्थरि थुरेउ ॥

मीर मुशर्रफ बीर कोपि भारी रन मंडेउ ।
अरि की प्रतन प्रचंड खंड खंडह करि खंडेउ ॥ १५७० ॥
गीध गूद बेताल मासहर मुंडमाल लिय ।
रुहिर प रुहिर अपार पाइ भैरव गल गज्जिय ॥
तजि सत्तु सूर को ग्रास फर श्रोन सिंधु मज्जन किएउ ।
लखि परत कृपानी रावरी मनहुँ दान उत्तम दिएउ ॥

कवित्त ।

आयो मौजदीन उत इततेँ फरुकसाहि,
दुहुँ ओर सोर ललकारेँ बीर बीर की ॥
भरा भरी गोलन की झरा झरी तेग की,
कटारिन की कराकरी तरातरी तीर की ।
श्रीधर बिलोयो दौरि बीरन की भीर रुंड,
मुंडन को मेरु श्रोन सलिता गँभीर की ॥ १५८० ॥
वाह वाह करै पातसाहरु सिपाह सब,
देखो रे दिलेरी यारो मुशरफ मीर की ॥
कोऊ ढूँढौ कोऊ वारो काहू मै न गुन भारो,
कोऊ वारनारी बस मन मैँ न आयो है ।
सुंदर सुजान सुजा सीलवंतु ओजवान,
दान पूरो एकै तोहि विधि ने बनायो है ॥
श्रीधर भनत सानी जलालदीँ अकबर,
फरुकसियर पातशाह वर पायो है ।
बाल पातशाहति सोयंवर कर करति,
तोहि देखि रीझि जयमाल पहिरायो है ॥ १५९० ॥
गेड़ी सौँ अराबो टारि भेड़ी सौँ बिदारि दल,
खल दल खूँदि कीनो छीन एजदीन को ।

धावा करि पूरब तें डावा डारि फौजनि को,
मीन सो पकरि लीनो शाहि मौजदीन को ॥
श्रीधर भनत पातशाहनि को पातशाह,
फरुकसियर भो पनाह दुहूँ दीन को ॥
मुलुक मुलुक दौरी फरदै फतूहनि को,
काँप्यो डरि गबर हरख बाढ्यो दीन को ॥
साजि दल फरुकसियर पातशाहपति,
श्रीधर बढ़त जब सहज शिकार है ॥ १६०० ॥

धूमरू सुभासा मेँ अराम इसफामेँ कित,
सुनि जलधर धुनि धौंसा की धुकार है ॥
हबसाने हहल खँधारनि के खल भल,
बलक बदकसान जान न रूका रहे ।
तारा दे केवारा दे केवारा देके वारा देहि,
पौरि पौरि लंकपुर परत पुकार है ॥
दक्खिन दहेलि पेलि पच्छिम उदीची जीति,
पूरब अपूरब हठीलो हाथु लायो है ।
श्रीधर शहनशाहि फरुकसियर नर,
सातो दीप सरहद्द हिंद की मिलायो है ॥ १६१० ॥

दिन दिन बाढ़ति है बाढ़िहइ दिन दिन,
दिन दिन दूनी पातशाहति बढ़ायो है ।
और पातशाह पातशाही पावैँ जब पाए,
तोसों पातशाह पातशाही जेब पायो है ॥
शादी शादियाने के उछाह आतपत्रनि के,
अंग अंग बाढ़े रंग बाढ़े है रखत के ॥
तेरी पातशाही पातशाही पायो जेब फल,
ठाढ़े नभ सुमन प्रसून बरखत के ॥

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।
